सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

• वर्ष : 12 • • अंक : 2 • • 5 मई : 2015 • • मूल्य : 20 रु. •

चैन्नई प्रतिष्ठा दीक्षा विशेषांक

मूलनायक
धर्मनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा

नवदीक्षित मुनि मलयप्रभसागरजी म.

नवदीक्षित प्रिय मुद्रांजनाश्रीजी म.

शोभायात्रा का विहंगम दृश्य

चैन्नई प्रतिष्ठा दीक्षा की झलकियाँ

साध्वी मंडल

प्रथम पुण्यतिथि

श्रद्धांजलि

श्रीमती खम्मादेवी संकलेचा

हजारों खुशिया कम है, इस गम को भुलाने के लिए,
यही एक गम काफी है, जिन्दगी भर रुलाने के लिए ।
याद आपकी आती है, आँखे भर आती है, यह ईश्वर की कैसी माया है,
समय से पहले जो ले जाती है । सिर्फ आपकी यादों को संजोये हुए...

पति : **छगनलाल**

पुत्र-पुत्रवधु
शांतिलाल - निर्मलादेवी, ललितकुमार - विमलादेवी, सुरेशकुमार - बिंदुदेवी, उत्तमकुमार - लतादेवी

ननदोई : छगनलाल गुलेच्छा

पुत्री - दामाद : पुष्पादेवी - जयंतिलाल श्रीश्रीमाल, अनितादेवी - मुकेशकुमार पटवारी

पौत्री - जवांई : पुनम - मुकेश नागौत्रा सोलंकी, पायल - विनोद बागरेचा, श्वेता - विरेन्द्र खजांची,

पौत्र - पौत्रवधु : प्रशांत - प्रीति, अभिषेक - श्वेता, श्रेयांश - दिपीका, प्रतिक - हिना

पौत्र पौत्री : मयंक, हार्दिक, दिव्या ※ पड़पौत्र - पड़पौत्री : अर्हम, कश्वी, विहा

दोयती - जवांई : सीमा - पीयुष बागरेचा

दोयते दोयती : दिलीप, संजय, भावेश श्रीश्रीमाल ※ दिव्यांग, तेजस्वीता, शिवानी पटवारी

एवं समस्त संकलेचा परिवार हैदराबाद, मरुधर में गढ़ सिवाना

The Rasoni's
RCS

फर्म

R. ROOPCHAND & CO.
Marketing and Distribution : Cosmetics,
Beauty Products Thermoware & General Goods
15-1-11, J.N.Road, Opp.Osmangunj, Hyderabad Tel. 24602155

PRINCE JEWELLERS
House of Gifts, Novelties and Photo Goods
15-8-514/5, Jain Mandir Marg, Feelkhana
Hyderabad - 500 012 (T.S.) Tel. 040 - 2461 2269

SHANTI STEEL PALACE
Wholesale Dealers in Stainless Steel Utensils
15-8-513/1-2, Jain Mandir Marg, Feelkhana
Hyderabad - 500 012 (T.S.) Tel. 040 - 2474 4179

I ESSENTIALS
4-1-358, Shop No. 9, 1st Floor, Askar Arcade,
Opp. Mayur Pan House, Hanuman Tekdi, Abids, Hyderabad.
email : ioieyewear@yahoo.in

भगवान महावीर

जो वि पगासो बहुसो, गुणिओ पच्चक्खओ न उवलद्धो।
जच्चंधस्स व चंदो, फुडो वि संतो तहा स खलु ॥

-बृहत्कल्पभाष्य 1224

शास्त्र का बार-बार अध्ययन कर लेने पर भी यदि उसके अर्थ की साक्षात् स्पष्ट अनुभूति न हुई हो, तो वह अध्ययन वैसा ही अप्रत्यक्ष रहता है, जैसा कि जन्मांध के समक्ष चंद्रमा प्रकाशमान होते हुए भी अप्रत्यक्ष ही रहता है।

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	06
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	08
4. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	11
5. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	12
6. मेरे बारे में मेरी अनुभूति	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	14
7. कांकरिया गौत्र का गौरवशाली इतिहास	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	18
8. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	21
9. समाचार दर्शन	संकलन	22-44
10. चातुर्मास लिस्ट	संकलन	45
11. साधु साध्वी समाचार	संकलन	48
12. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-109	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	51
13. जहाज मंदिर पहेली 106/107 का उत्तर		53
14. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	54

प्रथम दादा गुरुदेव युग प्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि द्वितीय आषाढ़ सुदि 11 सोमवार ता. 27 जुलाई 2015 को मनाई जायेगी।

जहाज मंदिर मांडवला द्वारा प्रकाशित दीपावली पंचांग में भूल से प्रथम आषाढ़ सुदि 11 ता. 28.6.2015 छपा है। पुण्यतिथि 27 जुलाई को मनाई जायेगी।

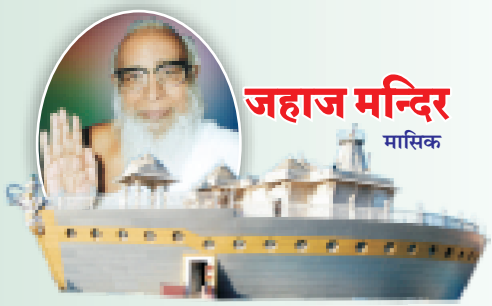

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 अंक : 2 5 मई 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	: 3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	: 1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

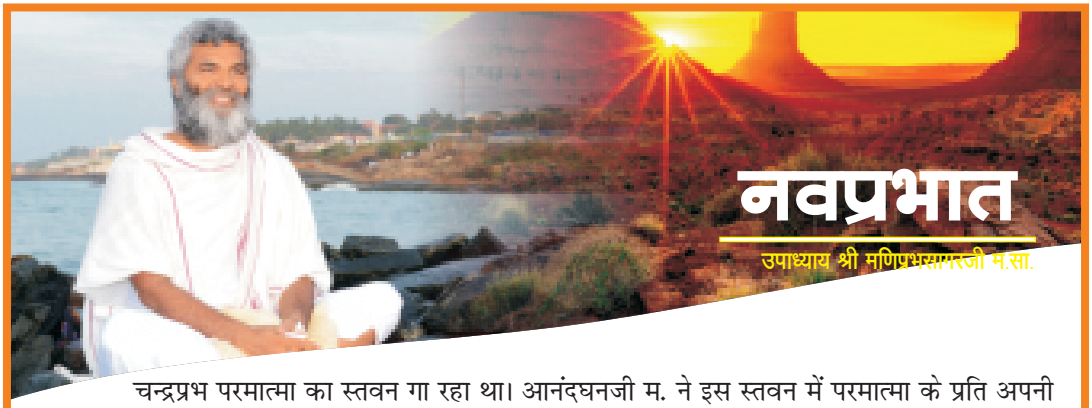

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

चन्द्रप्रभ परमात्मा का स्तवन गा रहा था। आनंदघनजी म. ने इस स्तवन में परमात्मा के प्रति अपनी श्रद्धा का सागर उंडेल दिया है।

परमात्मा क्या मिले... जीवन का लक्ष्य मिल गया! जैसे किसी प्यासे को पानी मिला!

जैसे किसी अंधे को आंख मिली! जैसे किसी मूरत में प्राण आ गये!

अपने इन्हीं अहोभावों की अभिव्यक्ति उन्होंने स्तवन की आंकडी में की है।

आंकडी है–

सखि मने देखण दे, चन्द्रप्रभु मुख चन्द, सखि मने देखण दे!

इस आंकडी में स्तवन का पूरा निचोड आ गया है। इस मुखडे का अर्थ हृदय में उतर जाये और यह अर्थ मेरा अपना हो जाये... यह अर्थ मेरे रोम रोम से आने लग जाये... तो समझना साधना पूर्णता को प्राप्त हुई।

कौन आनंदघन को रोक रहा है... जो वे कहते हैं– मुझे देखने दे... मुझे दर्शन करने दे...!

कोई तो है जो बाधा बना है। कोई तो है जो उन्हें रोक रहा है! कौन हो सकता है वो!

हाँ! मन है जो उन्हें रोक रहा है।

तो फिर प्रश्न होगा– दर्शन करने वाला कौन है! दर्शन करने को उत्सुक कौन है!

तो उत्तर होगा– मन है जो परमात्मा को देखना चाहता है।

ओह! मैं तो मन को समझ ही नहीं पा रहा हूँ। रोकने वाला भी मन... चाहने वाला भी मन... । तो एक ही मन डबल रोल कैसे कर रहा है!

बिल्कुल ठीक कहा– मन डबल रोल कर रहा है। हर व्यक्ति का मन करता है। मन की इस लीला को समझने के लिये मन का विभाजन करना होगा। यों तो मन के लाखों प्रकार है। पर संक्षेप में समझना हो तो हमें मन के दो भेद करने होंगे। एक अच्छा मन, दूसरा बुरा मन! अच्छे और बुरे की व्याख्या में समस्त प्रकार के मन आ गये।

आनंदघन योगी का अच्छा मन अपने बुरे मन से कहता है। डांट कर नहीं, बल्कि प्रेम से! उसे सखा... दोस्त बना कर! क्योंकि दोस्त बनाये बिना वह आपका काम नहीं कर सकता। और उन्हें अपना काम करना है। परमात्मा से मिलना है पर क्या करें, वह बुरा मन बार बार बीच में आकर... नये नये प्रस्ताव रख कर बाधा बन जाता है। इस लिये उसे मना कर परमात्मा से मिलना चाहते हैं। अपने मन को मित्र बना कर ही उससे काम लिया जा सकता है। अपना मन मित्र बना कि सारी दुनिया अपनी हो जाती है। फिर परायेपन के लिये कोई अवकाश नहीं रह पाता।

गुरूदेव
की कहानियाँ

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

हमारा चरित्र कैसा हो?

एक सैनिक अफसर जौहरी की दुकान पर पहुँचा। जवाहरात के आभूषण उसे दिखाये गये। उस अफसर ने हीरे की एक अंगूठी पसन्द कर ली। अंगूठी के रूपये दे दिए। उसने अंगूठी को ओवर कोट की एक भीतरी जेब में डाला और घर की ओर चल दिया।

घर जाकर अपने कोट की जेब में हाथ डाला तो अंगूठी नदारद। वह सोच में पड़ गया। अंगूठी कहाँ गई?उसे ध्यान था कि अंगूठी कोट की जेब में डाली थी।

काफी देर बाद उसने निर्णय किया, बहुत संभव है कि अंगूठी दुकान पर ही भूल आया होऊँ।

वह उल्टे पैरों दुकान पर पहुँचा और दुकानदार से सारे बातें निवेदित की।

दुकानदार ने अपनी सारी दुकान टटोल डाली, पर बेची हुई अंगूठी कहीं नहीं मिली।

दुकानदार ने कहा- श्रीमान! आप यहाँ पर अंगूठी नहीं भूले हैं। संभवत: आप कहीं इधर-उधर रखकर विस्मृत हो गये हैं।

अफसर ने कहा- मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अंगूठी यहीं भूल गया, क्योंकि मैं यहाँ से सीधा घर गया था। और कहीं नहीं गया।

दुकानदार ने पुन: पूछा- क्या आप निश्चय पूर्वक कह रहे हैं?

अफसर बोला- हाँ।

दुकानदार ने तुरन्त वैसी ही उतने मूल्य की अंगूठी निकालकर सैनिक अफसर के हाथ में रख दी। उस अंगूठी को अपने ओवरकोट की उसी जेब में डालकर वह अफसर अपने घर चला आया।

घर आकर उसने अंगूठी निकालने के लिए ज्यों ही जेब में हाथ डाला, उसे पसीना छूट गया। जेब में से अंगूठी गायब थी, वह हक्का-बक्का रह गया। उसे इस बार अच्छी तरह से याद था कि अंगूठी जेब में ही रखी थी, फिर कैसे गायब हो गई?उसने कोट को अच्छी तरह संभालना-टटोलना शुरू किया। ध्यान से देखने पर पता चला कि उसके कोट की वह भीतरी जेब फटी हुई है और दोनों अंगूठियाँ सरक कर नीचे की जेब में पहुँच गई हैं।

वह स्वयं के प्रति घृणा व ग्लानि से भर गया। उफ, मैंने पहले नहीं देखा और दुकानदार से दूसरी अंगूठी ले आया।

उसे दुकानदार की महिमा का स्मरण हो आया कि उसने बिना किसी हिचकिचाहट के दूसरी अंगूठी दे दी।

वह शर्मिन्दा होता हुआ पुन: दुकानदार के पास पहुँचा और धूजते हाथों से दूसरी अंगूठी वापस करते हुए सारी कथा प्रस्तुत की। दुकानदार ने वह अंगूठी ले ली और उसे धन्यवाद दिया।

वह सैनिक अफसर यह देखकर आश्चर्य चकित हो गया कि दुकानदार ने मुझे न डांटा, न फटकारा और न ही अंगूठी वापस लेते हुए कोई प्रसन्नता दिखाई।

उसने अपने इन भावों को अभिव्यक्ति देते हुए कहा- दूसरी अंगूठी आपने मुझे दे दी थी, यह जानते हुए भी कि पहली अंगूठी यहाँ नहीं छूटी है। उस समय आपके चेहरे पर कोई खिन्नता नहीं थी। अब मैंने अंगूठी वापस की तब कोई प्रसन्नता के भाव नहीं थे। इसका क्या कारण है?

जौहरी ने दो वाक्य में अपना सारा रहस्य उड़ेल दिया। अगर वे बातें आम आदमी हृदयंगम कर ले, तो जीवन का

नक्शा ही बदल जाये।

जौहरी ने गम्भीर स्वर में कहा- 'ग्राहक पर पूर्ण भरोसा करना हमारा कर्त्तव्य है, और सच्चाई की रक्षा करना आपका फर्ज है। दोनों ने अपना कर्त्तव्य निभाया। इसमें आचर्श्य की कोई बात नहीं।'

जरा टटोलें हम अपने चरित्र को इस कथा के परिप्रेक्ष्य में।

वक्त के थपेड़ों से आज आस्थाएं बदल गईं।
सदियों से बनी हुई मान्यताएँ बदल गईं।
पथरा रहीं हैं आज तो आँखें फिर हमारी-
जमाने के साथ सभी की संवेदनाएँ बदल गईं।

जीव राशि क्षमापना

चेन्नई। पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. आदि चतुर्विध संघ के पावन पगलिये गाजे-बाजे से 19 अप्रेल 2015 को श्री रीकबचंदजी रूपचंदजी दांतेवाडिया के निवास स्थल पर करवाये गये। व कामली ओढाई गई। बहिन सुमित्रा ने अपने भ्रातादय उपाध्यायश्री एवं मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. का कलश से स्वागत किया। पूज्य उपाध्यायश्री कुंकुंम के पगलिये किये। पूज्य श्री के श्रीमुख से सुश्राविका सुखीबाई को पद्मावती आलोयणा सुनाई गयी। इस अवसर पर पूज्य उपाध्याय प्रवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए कहा- जीवन में धर्म का सबसे ऊँचा स्थान है। धर्म वह है जो दुर्गति में गिरते हुए जीव को बचाता है और मुक्ति पद प्रदान करता है।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. ने पद्मावती आलोयणा का विस्तृत विवेचन करते हुए कहा- हम अपने जीवन में अधिकतर ऐसे पाप करते हैं जिनसे हम चाहे तो थोडी-बहुत सजगता पतन अनर्थकारी पापों के कारण होता है और अनर्थदण्ड का त्याग करके हम सुलस कुमार की भाँति परम पद को उपलब्ध हो सकते है।

स्वर्गीयश्री रीकबचंदजी दांतेवाडिया एवं श्रीमती सुखीदेवी पूज्य मुनिश्री मनितप्रभजी के धर्म-माता-पिता है इसी परिवार ने माण्डवला में सुमतिनाथ भगवान एवं जहाज मंदिर में मूलनायक शांतिनाथ भगवान को बिराजमान करने का लाभ प्राप्त किया था। अपनी माँ सुखीदेवी की प्रेरणा से जीव दया एवं सात क्षेत्रों में अच्छी राशि अर्पित की गयी।

इस अवसर पर माण्डवला आदि क्षेत्रों के सैंकडों भाविक आत्माएँ उपस्थित थी। परिवारजनों ने यथाशक्ति नियम स्वीकार किय। संघपूजन किया गया।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

प्रीत की रीत

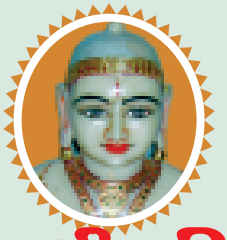

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्री सुविधिनाथ स्तवन

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

एक संत से किसी ने पूछा कि आप रोज-रोज परमात्मा की उन्हीं स्तुतियों से भक्ति क्यों करते हो?साल में एकाध बार जितनी भी स्तुतियाँ हैं, उन्हीं से भक्ति कर लेनी चाहिये। संत ने भक्त से पूछा- यह तुम्हारे पास पीतल का लोटा है, क्या इसे रोजाना रगड़-रगड़ कर साफ किया जाता है?

- हाँ महात्मन्!

- क्यों?क्या साल में एक बार रगड़ने से काम नहीं चलता?

- नहीं! अगर दो चार दिन भी नहीं रगड़ें तो सारी चमक खो जाती है।

संत ने कहा- जब एक लोटे की चमक को बरकरार रखने के लिये रगड़ना आवश्यक है तो क्या आत्मा की स्वच्छता, पवित्रता, निर्मलता बरकरार रखने के लिये भक्ति आवश्यक नहीं है?

जागरूकता कभी पाप नहीं करने देती। पापक्रियाएं मूर्च्छा की सघनता में ही जन्म लेती हैं। जागरूक भी रहें और कषायादि क्रियाएं करें, यह असंभव है। श्रीमद्जी ने जागरूकता की ही अभिलाषा की है। साथ ही वे यह भी कहते हैं कि मेरी समस्त क्रियाएं मेरे लिये हैं। बड़ा मार्मिक वाक्य है यह! आज तक चेतना ने जितनी क्रियाएं कीं, पराये के लिये कीं। अपने लिये कभी न की। अगर अपने लिये वह क्रिया करता तो मुक्त हो जाता। अब चूंकि श्रीमद्जी की मोह निद्रा भाग चुकी है, अत: अब वे बाहर से अंदर की ओर लौटना चाहते हैं। पर सहकार प्रभु का चाहिये। यह उनकी विनम्रता और समर्पण की पराकाष्ठा है।

प्रभु मुद्रा ने योग, प्रभु प्रभुता लखे हो लाल।
द्रव्यतणे साधर्म्य, स्वसंपत्ति ओलखे हो लाल॥
ओलखता बहुमान, सहित रूचि पण वधे हो लाल।
रूचि अनुयायी वीर्य, चरणधारा सधे हो लाल ॥६॥

प्रभु की मुखमुद्रा का योग पाकर स्वयं की प्रभुता को जीव पहचानना प्रारंभ कर देता है। द्रव्य के साधर्म्य (समान धर्म) से स्वयं की संपत्ति का परिचय होता है। निज संपदा की पहचान होने के कारण बहुमान सहित उसे पाने की रूचि जाग जाती है। रूचि जिस दशा में होगी, वीर्य गुण की स्फुरणा भी उधर ही होगी।

विनोबा भावे से किसी ने पूछा- आपकी भक्ति का स्वरूप क्या है?उन्होंने गहरा उत्तर दिया- मैं प्रभु से कहता हूँ कि तू और मैं अलग-अलग कहाँ हैं?तेरा अतीत मेरा वर्तमान है और तेरा वर्तमान मेरा भविष्य है! काल का ही तो अंतर है। बस! इसके अतिरिक्त तेरे और मेरे में क्या असमानता है?

श्रीमद्जी भी इस पद्य में इन्हीं भावों की रसधारा बहाते हैं। समान लक्षणों से निश्चित ही परोक्ष वस्तु जगती है। परमात्मा की चेतना और हमारी मूल चेतना में कोई भेद नहीं है। यह स्मरण परमात्मा के दर्शन से ही होता है। जिस राह से प्रभु ने प्रभुता को उपलब्ध किया, अगर उसी राह से हमारी चेतना भी चलना प्रारंभ कर दे तो परमात्मा का वर्तमान हमें भी उपलब्ध हो सकता है। आत्म दर्शन को हमें प्रस्थान करना है। इस प्रस्थान की प्रेरणा प्रभु हैं। क्योंकि प्रभु को देख कर ही हमें अपनी संपदा का भाव हुआ है। विश्वास भी हुआ कि तुम भी हमारे जैसों में से ही थे। चैतन्य शक्ति में कोई अंतर नहीं है। अंतर मात्र पुरूषार्थ में है। स्वयं को पाने का रूचिभाव जग गया तो अवश्य ही उसे प्रत्यक्ष करने के लिये हम जी जान से लग जायेंगे। यह निर्विवाद तथ्य है कि जिस दिशा में चेतना का रूचिभाव है, उसी ओर उसकी शक्तियाँ नियोजित होंगी। अगर चेतना पदार्थ-परक है तो उसकी समस्त शक्ति उन्हीं को एकत्र करने में लगेगी और आत्म-संपदा को पाने की

ललक जब भीतर जाग उठती है तो सारा संसार और बढ़िया से बढ़िया भोग के साधन भी महत्वहीन नजर आते हैं।

जंबूकुमार का जीवन और उनका संयम लेने के लिये प्रस्थान इतिहास की अद्‌भुत घटना है। कक्ष में रूप और सौन्दर्य की अद्‌भुत छटा बिखेरती भीगी-भीगी खुश्बू से जंबूकुमार को आकर्षित कर अपने नयन बाणों से उनके संयम भावों को बींधने की पूरी तैयारी! परंतु प्रथम रात्रि में ही महासंपन्न श्रेष्ठिपुत्र जंबूकुमार ने अपनी आठ दुल्हनों को तो संसार के भोगों से विमुख किया ही, साथ ही पाँच सौ चोरों के साथ चोरी करने आये प्रभव को भी प्रतिबुद्ध कर दिया। त्याग के प्रति अनोखा रूचिभाव.... और उसी रूचिभाव का परिणाम हुआ कि अकेले ही नहीं, अपितु पांच सौ सत्ताईस लोगों को भी संयमी बना दिया। भोग सामग्री के अंबार थे, परंतु जंबू पलभर के लिये भी विचलित नहीं हुआ।

आत्मसंपदा का भान नहीं जगे, तभी तक शक्तियाँ बाहर दौड़ती हैं; परंतु आत्मभाव होते ही अपनी पूर्व क्रियाएं स्वयं उसे ही बचकानी नजर आती हैं। प्रभु के सम्मुख जाकर बैठें! अनिमेष नयनों से उनके सौन्दर्य का पान करें! ऐसा लगेगा, जैसे साक्षात् प्रभु मुझे अपने समीप बुला रहे हैं।

क्षायोपशमिक गुण सर्व,
थया तुझ गुण रसी हो लाल।
सत्ता साधन शक्ति, व्यक्तता उल्लसी हो लाल।
हवे संपूरण सिद्ध, तणी शी वार छे हो लाल।
देवचंद्र जिनराज, जगत आधार छे हो लाल ॥७॥

हे प्रभु! क्षायोपशमिक आदि जितने भी गुण थे वे सारे तेरे गुणों के रसिये हो गये हैं। अनंत गुण रूप सत्ता के साधन उत्पन्न करने की शक्ति स्वयं उल्लसित हो गयी है। अब बताइये कि संपूर्ण सिद्धि की प्राप्ति में विलंब क्या है?श्रीमद्‌जी कहते हैं कि प्रभु का दर्शन करके अनेकों ने स्वयं का स्वरूप जाना है। अत: यही सर्वोत्तम आधार है।

श्रीमद्‌जी प्रस्तुत पद्य तक आते-आते संपूर्णत: आशा और विश्वास से भर गये हैं। उन्हें ऐसा लगने लगा है कि सारी प्रकृति उनकी भावपूर्ति में सहायक बनती जा रही है। बने भी क्यों नहीं! इन्सान का संकल्प अगर दृढ़ है तो उस संकल्प की ऊर्जा से संपूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभावित होकर उसके संकल्प की पूर्ति में योगदान देने हेतु तत्पर हो उठता है।

वर्तमान की सबसे बडी समस्या है मानसिक कमजोरी! जब मानसिक दुर्बलता बढ़ जाती है तब व्यक्ति छोटा-सा कार्य भी नहीं कर पाता। समस्या कभी छोटी-बड़ी नहीं होती। मानवीय मन अगर दुर्बलता का शिकार है तो छोटी-सी बात से ही वह भन्ना जायेगा। और मानसिक दृढ़ता है तो चट्टान से भी टकरा जायेगा। समस्या को सुलझाने में वह संकल्प शक्ति का सहारा लेता है तो बड़ी समस्या भी सुलझ जाती है। व्यवहार में हम देखें कि अगर आय और व्यय समान है तो अतिरिक्त कार्य नहीं हो सकता। शक्ति शरीर में जितनी अर्जित होती है, उसे विसर्जित करने की अपेक्षा भीतर में संचित करें। तनाव शक्ति-विसर्जन का कार्य करता है। हम तनाव से भरसक बचने की चेष्टा करें।

हमारे शरीर में एक तरल पदार्थ है, जो भूरा होता है। यह मस्तिष्क से लेकर पृष्ठरज्जु तक फैला हुआ है। यह शक्ति संचरण का माध्यम है। इसे मज्जा कहते हैं। मानव के आध्यात्मिक या बौद्धिक विकास की पृष्ठभूमि में यही पदार्थ है। इसमें अद्‌भुत शक्तियाँ हैं। इसे अगर प्रभावित किया जाये तो न मात्र बौद्धिक अपितु आध्यात्मिक अतीन्द्रिय चेतना का जागरण भी संभव है।

हम इसी मज्जा को अपने ध्यान के माध्यम से विकसित करें। अवश्य ही हमारी शारीरिक शक्ति हमें सहकार देगी। चूंकि हमारी चेतना प्रभु को समर्पित हो गयी है और जब तक प्रभुता उपलब्ध न होगी, तब तक अब उसे चैन नहीं है। आत्म सत्ता में सहकारी जितने भी साधन हैं, वे सारे भी अब चैतन्य को सहयोग देने के लिये तत्पर हो उठे हैं। श्रीमद्‌जी पूछते हैं कि जरा बताइये कि फिर सिद्धि प्राप्ति में विलम्ब क्यों?

पुन: अंतर से समाधान आता है कि अवश्य ही काम्य प्राप्त होगा। क्योंकि प्रभु ने संसार में अनेकों को तारा है। तभी तो प्रभु **'तिन्नाणं तारयाणं'** हैं। मेरे भी मनोरथ पूरे करेंगे ही।

With best compliments from

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

30
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

उत्प्रव्रजित साधुः नादान और अबुद्ध

अठारह प्रकार के सूत्रों की भावधारा बहाने के बाद भी यदि कोई श्रमण संयम का महत्त्व नहीं समझता, भव-परम्परा, कर्म-बन्धन और दुःख -सवंर्धन का चिन्तन नहीं करता तो समझना कि वह मुनि कदाग्रही और नादान है।

जया य चयइ धम्मं, अणज्जों भोगकारणा।

से तत्थ मुच्छिए बाले, आयईं नावबुज्झइ।।1।।

अर्थात्-जो मुनि धर्म को जानता, पहचानता एवं समझता नहीं है, वह अनार्य है। भोगसुखों के लिये यदि चारित्र धर्म का त्याग करता है तो समझना कि वह मूर्ख और नादान है। क्योंकि वह संसार के भोगों में मूर्च्छित बनकर अपने समुज्ज्वल भविष्य का चोपट कर देता है।

. जो आत्मा के हित एवं अहित को जाने, वह आर्य है। जो ऐसा न कर सके, वह अनार्य है!

. जिसकी दृष्टि शरीर के पार आत्मा को देखती है, वह आर्य। जो शरीर की हीचिन्ता करे, वह अनार्य।

. जिसकी सोच परभव तक जाती है, वह आर्य। जो इस भव का भी हित न साध सके, वह अनार्य!

भारत देश की अस्मिता सबसे जुदा रही है।

. यहाँ पाप करना न पडे, ऐसी **सजगता।**

. यहाँ पाप करना पडे तो भी **पश्चात्ताप।**

. यहाँ पाप हो जाये तो **प्रायश्चित्त।**

. यहाँ पाप करते समय **अन्तर्वेदना।**

. यहाँ पाप से छुटने के लिये **पराक्रम।**

. यहाँ पाप से छूटने की **प्रसन्नता।**

. यहाँ पाप मुक्ति की **साधना।**

इस भव्य भूमि का सपूत साधु पुनः संसार की वासनाओं में लिप्त हो जाये तो उसके कपूतत्व का क्या कहे!

जिस देश के लोग लज्जा और मान गंवाकर जीने की बजाय जहर पीकर मर जाना पसंद करते हैं, उसी देश का पंच महाव्रतधारी एक साधु उस महावेश की संपदा को छोडने चला है, जिसके लिये हजारों-लाखों भव्यात्माएँ तरसती हैं।

कामांध, विषयांध और आशांध बना वह साधु दुःखों की भयंकर और असह्य परम्परा को अपनी दिव्य दृष्टि से निहार नहीं पाता। घोर विडम्बना! कर्मो का भयंकर आक्रमण। अरे! लक्ष्मणा साध्वी ने आलोचना मायापूर्वक की पर 81 चौबीसी जितना भव भ्रमण बढा!

इससे उपर जो सर्वथा पंच महाव्रतों का त्याग करता है, उसकी भयावह दुर्गति होती है। इसीलिये तो उस साधु को शास्त्रकार अबोध, नादान और मूर्ख कहते हैं क्योकि वह हाथ में आया हीरा जानबुझकर समुद्र में फैक देता है।

38
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

वि. सं. 2018 की बात है। पूज्यश्री का विहार बाडमेर से चौहटन की ओर हो रहा था। बीच में राणी गांव में रूके थे। वहाँ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा करानी थी।

प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त पूज्यश्री ने ज्येष्ठ सुदि 13 का दिया था। भयंकर गर्मी थी। अष्टाह्निका महोत्सव के साथ परमात्मा सुमतिनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी।

प्रतिष्ठा से एक दिन पहले एक अजैन महिला पूज्यश्री के दर्शन करने आई थी। पूज्यश्री ने मारवाडी भाषा में बात की थी। उसने कहा- बापजी! बाकी सब तो लीला लेर है। पर बारिस कुनी। आप फरमावो- बारिस कदे वेला।

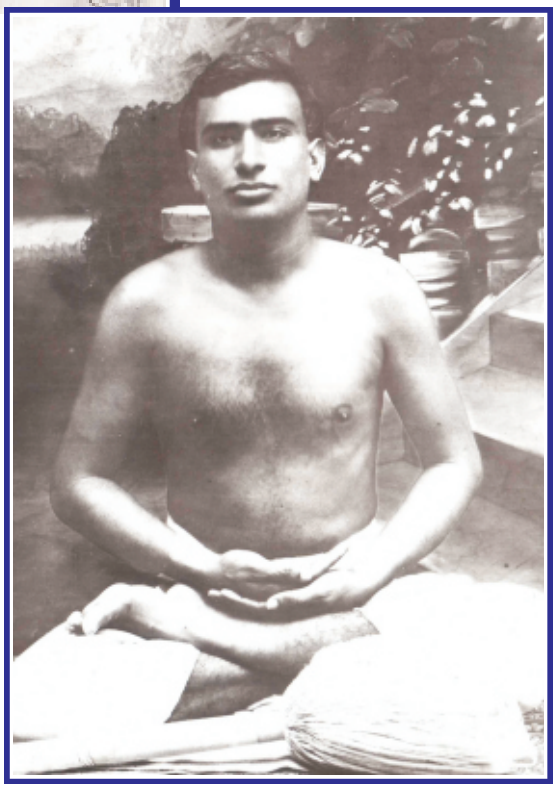

पूज्यश्री ने चिंतन किया। इस बाई को यह समझाना बडा मुश्किल काम है कि हम जैन साधु हैं। हमें इन सब बातों का कोई लेना देना नहीं है। यह सब कर्म बंधन का कारण है।

उस महिला ने कहा- आप एडो जोरदार भगवान रो जाप करो के अठे बारीस वे जावे!

पूज्य श्री ने कहा- बारिस किसी के हाथ में नहीं है। भगवान का नाम लेने से... धर्म करने से.. सब ठीक होता है।

पता नहीं, पूज्यश्री की बात उसे कितनी समझ में आई। पर उसे जो समझ में आया, वह उसकी प्रसन्नता के लिये पर्याप्त था। उसने समझा था कि भगवान का नाम जपने से बारिस आयेगी। उसने सोचा- हमारे लिये तो ये

बापजी ही भगवान है। इन्हीं का नाम स्मरण करें।

और जैसे उस गांव में चमत्कार हुआ। बारिस के कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे... न बादलों की अठखेलियां थी, न बिजली के चमकारे! पर अचानक जैसे वातावरण ने यू टर्न लिया। और प्रतिष्ठा के दिन जबरदस्त मूशलाधार बारिश हुई। जैसे लम्बे समय की धरती की प्यास बुझी।

दूसरे दिन वह महिला दौडी दौडी पूज्यश्री के पास पहुँची। उसने कहा- बापजी! मैंने कल आपसे बारिश मांगी थी। आज बारिश हो गई। आप वचन सिद्ध महापुरूष हो। में कतरी मूरख हूँ। मांगे मांगे ने बारिस मांगी। आज तो मूं आपसुं सोने की बरसात मांगती तो वो भी फल जावती।

यह पूज्य की वचन सिद्धि का प्रभाव था। राणी वाले आज भी इस घटना को भूले नहीं है।

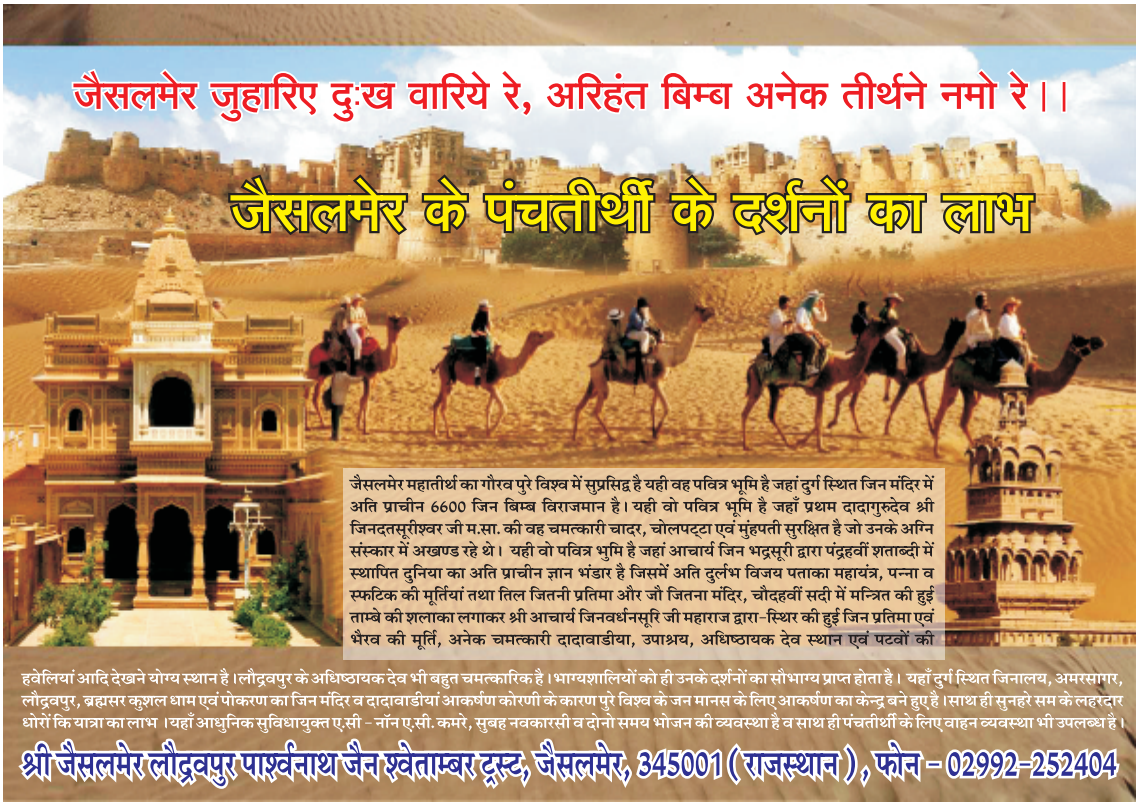

मधुर संस्मरण

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

मेरे बारे में मेरी अनुभूति

अभी मेरा विचरण के लक्ष्य से विभिन्न क्षेत्रों में प्रवास हो रहा है। विचित्र संयोग है कि लगभग दो माह की अवधि में मैं तीन प्रदेशों का स्पर्श कर रही हूँ। कुछ क्षेत्र छत्तीसगढ़ के हैं, कुछ गाँव महाराष्ट्र के तो कुछ म. प्र. के भी हैं। इस प्रवास में मैं क्षेत्रगत विशिष्टताओं का अनुभव कर रही हूँ तो कुछ भिन्नता का भी अनुभव हो रहा है।

इसी विचरण काल में मुझे कुछ लोग मिले जो भारत का अंतिम किनारा, जहाँ पर त्रिवेणी संगम है; कन्याकुमारी की प्रतिष्ठा पर पहुँचे थे। वे कहने लगे- 'आपको किन शब्दों में वहाँ की व्यवस्था के बारे में बतायें महाराज श्री! देश विदेश के लोगों की मात्र पर्यटन स्थली कन्याकुमारी में हमने जो व्यवस्था देखी, वह अंचभित करने वाली थी। जहाँ जैन समाज का एक भी भवन नहीं, जहाँ जैन समाज का एक भी घर नहीं, वहाँ तीन दिनों के लिये इतनी अद्‌भुत व्यवस्था हमारे लिये अहोभाव और आश्चर्य, दोनों ही पैदा कर रही थी।'

सहज ही मैं लगभग 10 वर्ष पूर्व के वातावरण में पहुँच गयी। मेरी स्मृति में उभर आया कोडै-कनाल का प्रतिष्ठा महोत्सव। 2004 का बेंगलोर चातुर्मास संपन्न कर हम 2005 के चातुर्मास के लिये चैन्नई पहुँचे थे। पूज्य उपाध्याय श्री का चातुर्मास चन्द्रप्रभु जूना मंदिर में था एवं हमारा धर्मनाथ मंदिर में।

चैन्नई पहुँचने के क्षणों में मेरी आँखों ने एक अपेक्षित व्यक्ति को ढूढ़ने का प्रयत्न किया। नहीं दिखे तो पूछा। उत्तर मिला- स्वास्थ्य संबंधी कारणों से अभी कोडै-कनाल हैं। दो दिन बाद आयेंगे। मेरी अपेक्षा थी कि मेरे चैन्नई प्रवेश में तो उन्हें होना ही चाहिये। अपेक्षा अकारण न थी।

यद्यपि यह सत्य है कि जहाँ अपेक्षा है, वहाँ कभी भी समाधि नहीं हो सकती। जो व्यक्ति बिना किसी अपेक्षा से अपने कर्तव्य करता हुआ यथा-शक्ति और यथा-संभव अपने हृदय का पवित्र प्रेम बांटता रहे तो उसका अपना जीवन अत्यंत स्वस्थता को प्राप्त करता है। परंतु यह सोचना जितना आसान है, करना उतना ही कठिन। हमारा हर कदम अपेक्षा से बंधा हुआ ही आगे बढ़ता है। मैंने उसे वक्त पर सहायता की तो उसे मेरा कृतज्ञ होना ही चाहिये। मैंने उसका कार्य किया तो बदले में उसे भी मेरा कार्य करना चाहिये। इंसान प्रेम भी करता है तो प्रतिदान की आशा अवश्य करता है। अपेक्षा रहित प्रवृत्ति भी योग का रूप धारण कर लेती है। खैर.....।

पूर्व निर्धारित अवधि पर वे चैन्नई आ गये और दोपहर होते-होते वे मेरे पास पधार गये। मैं चर्चा कर रही हूँ हमारे संघ वरिष्ठ श्रावक शासनरत्न श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की। मेरी गुरूमाता प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्री जी म.सा. की सगाई पालने में ही श्री लालचंदजी ढड्ढा से हो गई। संयोग से गुरूवर्या श्री के जीवन में वैराग्य के फूल खिले और उन्होंने नौ साल की उम्र में सयंम स्वीकार कर लिया।

श्री लालचंदजी सा. संयम नहीं स्वीकार कर पाये, पर उनका जीवन संयम का पर्याय रहा। मात्र सगाई संबंध होने पर भी ढड्ढा सा. का गुरूवर्या श्री के प्रति आजीवन गहरा आत्मीय भाव रहा और इसी कड़ी में उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री मिलापचंदजी सा. का भी गुरूवर्या श्री के प्रति सही श्रद्धाभाव रहा। चूंकि वे गुरूवर्या श्री से संबंधित थे, अत: मेरे हृदय में उनके प्रति अधिकार के भाव भी थे।

वैसे इन भ्रातायुगल ने मेरे प्रति गुरूवर्या श्री की उपस्थिति और विशेष रूप में जब तक हम फलोदी में थे, तब तक कर्तव्य समझा भी था। मुझे याद है फलोदी गुरूवर्या श्री के दर्शनार्थ जब छोटे या बड़े, दोनों में से कोई एक जब पधारे थे, मेरी उम्र को देखकर उन्होंने गुरूवर्या श्री से निवेदन किया था- आप इन्हें संस्कृत प्राकृत तो पढ़ायेंगे ही, पर आप अंग्रेजी विषय में भी इन्हें तैयार करें। उन्होंने उसी दिन से मेरे लिये अंग्रेजी पेपर शुरू करवाया था। मेरी संस्कृत पढ़ाई की व्यवस्था भी इसी परिवार द्वारा वर्षों तक हुई थी। संयोग से श्री मिलापचंदजी सा. का 1975 में प्लेन दुर्घटना से स्वर्गवास हो गया।

परन्तु फलोदी सें 1979 में विहार के बाद ढड्ढा परिवार से मेरा संपर्क नहींवत् हो गया। कभी कभार मिलना भी हुआ तो अपेक्षित उस अपनत्व का अभाव ही रहा!

मैंने अपनत्व युक्त शिकायती लहजे में उनसे कहा- चैन्नई प्रवेश में आप की अनुपस्थिति से मुझे अच्छा नहीं लगा। उन्होंने अत्यंत माधुर्य से कहा- आपकी शिकायत उचित है। वैसे बहुत सारी शिकायतें एकत्र हो गयी होंगी, परन्तु आपकी सारी शिकायतें मात्र एक ही वाक्य से समाप्त हो जायेंगी।

मैने हँसते हुए कहा- ऐसा कौन सा मंत्र आपने खोजा है कि जिसमें मेरी सारी शिकायतों को हवा के रूप में उड़ा देंगे?

उन्होंने कहा- कोडै-कनाल लोगों के लिये अत्यंत आकर्षक पर्यटन स्थली है। वहाँ मेरा बंगला है। बंगले के पास ही मेरा एक प्लॉट खाली है। मेरी भावना है वहाँ प्रमोद वाटिका का निर्माण हो। लगभग विधान आदि सारा तैयार हो गया है। आप श्री एवं पूज्य उपाध्याय श्री की पावन निश्रा में 'प्रमोद वाटिका' में मंदिर की प्रतिष्ठा का कार्यक्रम चातुर्मास के तुरन्त बाद ही करने की भावना है।

मैंने सुना तो मेरा मन प्रसन्नता से भर गया। गुरूवर्या श्री के नाम से बनने वाले इस मंदिर के निर्माण की उनकी कल्पना को सुनकर वाकई में मेरी समस्त शिकायतों का पुलिंदा भाप बनकर उड़ गया। अभी तक चैन्नई में पू. उपाध्याय श्री का प्रवेश नहीं हुआ था।

उस समय तक उपाध्याय श्री से उनका परिचय मात्र व्यवहारिक धरातल पर ही था। संभवत उपाध्याय श्री के आभामंडल से उनका परिचय हुआ ही न था। समय पर उपाध्याय श्री का प्रवेश हुआ। हमारे चातुर्मास स्थल से उनके चातुर्मास स्थल की दूरी लगभग 1 या 2 कि.मी. थी। श्री ढड्ढा जी ने अपनी गच्छनिष्ठा, गुरूभक्ति एवं श्रवणरूचि दिखाते हुए प्रतिदिन प्रवचन श्रवण का नियम बना लिया।

जब मैं वंदन करने उपाध्याय श्री के वहाँ गयी थी तो मैंने 'प्रमोद वाटिका' की बात की; और कहा- ढड्ढा सा. की मानसिकता है कि वे यहाँ से सीधे आपको कोडै-कनाल प्रतिष्ठा हेतु ले जायेंगे।

पूज्य उपाध्याय श्री ने कहा- यह कैसे संभव है?आदोनी की प्रतिष्ठा का मुहूर्त दिया जा चुका है।

मैंने कहा- कैसे होगा, यह मैं नहीं जानती; पर वे आपसे यह अपेक्षा रखे हुए हैं?

समय धीरे-धीरे सरकता रहा। पू. उपाध्याय श्री के सरल, सहज एवं दार्शनिक व्यक्तित्व से श्री ढड्ढा सा. जितने प्रभावित हुए, उससे ज्यादा आत्मीय बने! 'प्रमोद वाटिका' के प्रति वैसे भी उपाध्याय श्री के हृदय में अनुराग होना स्वाभाविक प्रक्रिया थी, फिर संयोग से आदोनी की प्रतिष्ठा एक साल आगे हो गयी। प्रमोद वाटिका की प्रतिष्ठा का रास्ता इस कारण खुल गया।

जिस दिन पू. उपाध्याय श्री की निश्रा में चैन्नई में उपधान तप की माला का आयोजन था, उसी दिन प्रमोद वाटिका की प्रतिष्ठा का मुहूर्त लेकर प्रतिष्ठा की निश्रा के लिये विनंति की गयी। हम सभी चिंतित भी थे और चकित भी, कि यह सब कैसे होगा?अभी तो शिलान्यास भी नहीं हुआ और प्रतिष्ठा का मुहूर्त ले लिया। पर श्री ढड्ढा सा. पूर्णत: निश्चित थे। उन्हें पुरूषार्थ एवं पुण्य, दोनों पर भरोसा था। 45 दिन की अवधि में मंदिर तैयार भी हो गया।

चातुर्मास के बाद हमने चैन्नई से कोडै-कनाल की ओर प्रस्थान किया। इस विहार व्यवस्था में हमारे आत्मीय श्री सुरेन्द्रजी कोठारी का भरपूर योगदान रहा। संयोग से कुछ दिन तो मुकेश भी न था, पर सुरेन्द्रजी ने हमें हल्की सी आंच भी आने न दी। विहार से एक दिन पूर्व ही उनका एक्सीडेंट भी

हुआ, पाँवों में लगी भी खूब; फिर भी वे विहार में पूरी तरह सहयोगी रहे।

मदुरै तक तो फिर भी ठीक था, पर बाद में तो स्थान की खूब समस्या रहती थी। फिर भी गुरूजनों के अनुग्रह से समाधान हो ही जाता था। जिस दिन हम मदुराई पहुँचे, उसी दिन मंदिर व्यवस्था व प्रतिष्ठा की तैयारी हेतु श्री ढड्ढा सा. स्वयं कुछ परिजनों के साथ कोडै-कनाल पधार गये। बावहरी से लगभग 70 कि. मी. की चढ़ाई थी। गाड़ी को चढ़ने में जितना समय लगता था, उतरने में उससे भी ज्यादा समय लगता था। ऐसी विकट पहाड़ी चढ़ाई।

व्यवस्था में जैसा संतुलित चिंतन ढड्ढा सा. का चलता था, संभवत: वैसा कम ही देखा गया है। उन्होंने विहार व्यवस्था के लिये पूरी माकूल व्यवस्था की।

जब हम तलहटी से चौथे दिन कोडै-कनाल पहुँचे, ढड्ढा परिवार एवं उपस्थित जनता द्वारा गुरू भगवंतों को बधाया गया। उन्होंने पूज्य उपाध्याय श्री को अपने बंगले में ही प्रथम तल पर बने कक्ष में रोका एवं हमें बंगले से लगभग आधा कि.मी. दूर अन्य बंगले में रूकवाया।

कोडै-कनाल की सर्दी के संबंध में हमें प्रारंभ में ही बता दिया गया था, अत: अपेक्षित सामग्री साथ में थी। ज्योंहि हम अपने आवास पर पहुँचे, दैनिक जरूरत की सारी सामग्री हमारे समक्ष थी। बाल्टी, टब, बांधने की डोरी, कपड़े पर लगाने के क्लिप एवं परात आदि देखकर हम सभी की आँखें जहाँ चौड़ी हुईं, वहीं ढड्ढा सा. की इन छोटी-छोटी चीजों के प्रति सावधानी से प्रसन्नता हुई कि इतने वरिष्ठ श्रावक के हृदय में अपने साधु-साध्वी भगवंतों के प्रति कितना अहोभाव और वात्सल्य है।

हम लगभग वहाँ एक सप्ताह रूके, पर इस अवधि में हमने उनकी जैसी जागकरूता देखी, सदा के लिये उनकी ऐसी छवि अंकित हुई कि आज व्यवस्था संबंधी कोई पूछे तो हमारी प्रतिक्रिया होती है कि आपको मैनेजमेंट देखना हो तो ढड्ढा सा. का देखें।

हमारी गोचरी की व्यवस्था उन्होंने कैसे समझी?जब मैंने बहुत बाद में उनसे यह पूछा था तो उन्होंने बताया- 'मैं प्रथम दिन तीनों समय गोचरी के वक्त उपस्थित रहा, यह जानने के लिये कि आप क्या लेते हैं। यह हम अंदाज से समझ गये थे।'

मैंने उनकी जागरूक प्रज्ञा का लोहा माना और सोचा कि वाकई में अगर यह व्यक्तित्व कुछ और पहले संघ और शासन के लिये सक्रिय होता तो शायद संघ को काफी ऊँचाई दे सकता था।

कोडै-कनाल पर्यटन स्थल था। अत: अपेक्षा से कई गुणा जनता पहुँच रही थी। उनका संदेश होता था- हम इतने लोग तलहटी में अमुक समय पहुँच रहे हैं और हमारा इतने दिन का प्रवास है।

आज भी मैं उनकी व्यक्तिगत सेक्रेटरी चन्द्रकलाजी को नहीं भूल सकी हूँ। कितनी तत्परता से वे पितातुल्य अपने बॉस के निर्देशों को समझकर क्रियान्वित करती थीं। आगंतुक को मात्र अपना परिचय देना होता था। बस उसके बाद सारी व्यवस्थाएं स्वत: हो जाती थीं।

चैन्नई की उपस्थिति सबसे अधिक थी। प्रतिष्ठा के बाद जब शांतिनगर, बेंगलोर प्रतिष्ठा पर ढड्ढा सा. पधारे तो मैंने कहा- ऐसी व्यवस्थित, संतुलित एवं भव्य व्यवस्था मेरे अनुभव में नहीं आयी। खर्चा इससे भी अधिक बहुत बार हुआ होगा, परन्तु किसी भी चीज के लिये न हमें कुछ कहना पड़ा और न आगंतुक मेहमान को; और सबसे बड़ी बात यह कि आपने पुन: लोगों को वापस पहुँचाया भी था।

उन्होंने हँसते हुए कहा- यह सत्य है कि व्यवस्था संतोष-पूर्ण रही; पर इसमें राशि का जितना महत्व है उससे ज्यादा महत्व है चितंन का। हमने ट्रेवल एजेन्सी की जो चैन्नई जाने वाली बसें थीं, यात्री संख्या के आधार पर टिकिट्स खरीद ली। आप विश्वास करें, जिस तरह की सुविधाएं दी गयी थीं; उससे जनता को जरूर अनुमान होगा कि बहुत बड़ी राशि खर्च हुई है, पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य हुआ, अत: अनुमान की अपेक्षा कम खर्च हुआ। निष्कर्ष था कि 'चवन्नी रूपये में चली'।

आज भी जब हम उस हिल स्टेशन की प्रतिष्ठा की

स्मृति करते हैं, जहाँ मात्र होटल हैं, सामाजिक व्यवस्था या सुविधा का सर्वथा अभाव है, मन गद्‌गद् हुए बिना नहीं रहता। ऐसे वातावरण में न हमें किसी भी व्यवस्था के लिये कुछ कहना पड़ा और न किसी गृहस्थ को एक हल्की सी आवाज भी निकालती पड़ी। आज भी हम हजारों कार्यक्रम देखकर भी व्यवस्था की प्रशंसा अथवा उदाहरण के लिये तो कोडै-कनाल की प्रतिष्ठा को ही याद करते हैं।

आज जब कन्याकुमारी की प्रतिष्ठा को देखकर आये लोगों ने व्यवस्था से अभिभूत होते हुए अनुमोदना की तो मेरी आँखों में तुरंत ही कोडै-कनाल का चित्र उभर आया। हमारे संघ के वरिष्ठ श्रावक एवं परम आत्मीय श्री ढड्ढा सा. के नेतृत्व में निसंदेह कोडै-कनाल ने जहाँ इतिहास बनाया है, वहीं कन्याकुमारी का मंदिर एवं प्रतिष्ठा प्रसंग भी जिनशासन की अनमोलन विरासत बनेगा।

गौशाला का प्रारंभ ''दि रिषभ गौलाशा''

चेन्नई से 35 किलोमिटर दुर पेरीयापालम् रोड़ पर भव्य गौशाला, अनाथ आश्रम, वृद्धा आश्रम बनने जा रही है। 5. 50 एकड़ जमीन पर बनने जा रही इस गौशाला की रजिस्ट्री हो गयी है और काम शुरू हो गया है। इस गौशाला में शुरू में 300 गायों की पुरी देखभाल की जायेगी। सर्वधर्म मन्दिर, फार्म हाऊस आदि व्यवस्था होगी। भोजनशाला की भी व्यवस्था चालु की जायेगी। गौशाला की व्यवस्था ''साधना माताजी'' की देखरेख में होगी जो 40 वर्षो से गौ सेवा कर रही है। यह जानकारी संस्था के सदस्य जैन राजेन्द्रकुमार (दाँतेवाडीया) ने दी।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 6 ने ता. 4 को वडपलनी में परिकर प्रतिष्ठा करवा कर शाम को विहार किया। खिमेल निवासी श्री दीपकजी मेहता के घर रात्रि प्रवास कर प्रात: विहार कर केसरवाडी पधारे। वहाँ से शाम को विहार कर रेडहिल्स स्थानक में रूके।

पूज्यश्री सिंधनूर की ओर विहार कर रहे हैं। लगभग 27 या 28 मई तक सिंधनूर पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 29 मई को कुमारी शिल्पा नाहर की भागवती दीक्षा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री का रायपुर की ओर विहार होगा। जहाँ चातुर्मास हेतु ता. 25 जुलाई को प्रवेश होगा।

संपर्क :

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

द्वारा कैलाश बी. संखलेचा

नवनिधि एण्टरप्राइजेज

384, मिन्ट स्ट्रीट, ऑफिस 29, दूसरा माला, चेन्नई- 600079 (तमिलनाडु)

संपर्क- कैलाश- 094447 11097 / मुकेश- 09784326130 / 96264 44066

कांकरिया गोत्र का इतिहास

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

कांकरिया गोत्र का उद्भव नवांगी वृत्तिकार खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म. के पट्टधर आचार्य जिनवल्लभसूरि के उपदेश से हुआ है।

वि. सं. 1142 का यह घटनाक्रम है। चित्तौड नगर के महाराणा के राजदरबार में भीमसिंह नामक सामंत पदवीधारी था। वह पडिहार राजपूत खेमटराव का पुत्र था। वह कांकरावत का निवासी था। उसे महाराणा की चाकरी करना पसंद न था। एक बार राजदरबार में किसी कारणवश सामंत भीमसिंह आक्रोश में आ गये। उनका स्वाभिमान जागा और वे अपने गांव चले गये।

महाराणा को यह उचित नहीं लगा। तुरंत सेवा में चले आने का हुकम जारी किया। पर सामंत भीमसिंह ने वहाँ जाना स्वीकार नहीं किया।

इस पर अत्यन्त क्रुद्ध होकर महाराणा से विशाल सेना भेजी और आदेश दिया कि सामंत भीमसिंह को कैसे भी करके बंदी बना कर मेरी सेवा में उपस्थित किया जाय।

गुप्तचरों से सेना के आगमन के समाचार ज्ञात कर भीमसिंह भयभीत हो उठा। अब मेरी रक्षा कौन करेगा! इस चिंता में उसे अनुचरों ने बताया कि अपने गांव में पिछले दो तीन दिनों से आचार्य जिनवल्लभसूरि नामक बडे आचार्य आये हुए हैं। योगी हैं, चमत्कारी ज्ञात होते हैं। उनकी साधना का तेज मुखमंडल पर चमक रहा है। आप उनकी सेवा में जाओ, कोई मार्ग निकलेगा।

भीमसिंह दौडा दौडा उपाश्रय में गया। आचार्य जिनवल्लभसूरि के चरणों में बैठकर अपनी विपदा का वर्णन किया। उसने कहा- गुरुदेव! मैं और मेरा स्वाभिमान आपकी शरण में हैं। मुझे बचाईये। आप जो भी आदेश देंगे, उसे मैं स्वीकार करूँगा।

ज्ञानी गुरुदेव आचार्यश्री ने उसका चेहरा देखा। ललाट की रेखाऐं पढी। भवितव्यता का रहस्य जाना। और कहा- तूं यदि मेरा आदेश मानता है तो मैं तेरी रक्षा का उपाय कर सकता हूँ।

सुनकर भीमसिंह की आँखों में चमक आ गई। तुरंत हाँ भरते हुए कहा- आप आदेश दीजिये। आप जो भी आदेश देंगे, मैं उसका अक्षरशः पालन करूँगा।

गुरुदेव ने कहा- सबसे पहले तो तुझे मांसाहार का सर्वथा त्याग करना होगा। सामंत की स्वीकृति पाकर गुरुदेव ने सप्त व्यसनों से मुक्त होने का नियम सुनाया। फिर कहा- तुझे वीतराग परमात्मा महावीर का अनुयायी होना है।

उसने सहर्ष स्वीकृति देते हुए कहा- भगवन्! आप मेरी रक्षा करो। मैं जैन श्रावक होने को तत्पर हूँ। मेरा पूरा परिवार आपकी आज्ञा को सहर्ष शिरोधार्य करेगा।

गुरुदेव ने कहा- ऐसे नहीं! मैं कहूँ और तुम मान लो। मैं तुम्हारी सुरक्षा के बदले तुम्हारा जैनत्व नहीं चाहता। अपितु मैं चाहता हूँ कि तुम पहले धर्म का स्वरूप समझो। और तुम्हें लगे कि परमात्मा का अहिंसा मूलक धर्म सत्य से ओतप्रोत है, तो फिर इसे स्वीकार करो। गुरुदेव ने लगातार उसे धर्म की देशना दी। धर्म के सत्य स्वरूप को समझकर

भीमसिंह प्रभावित हुआ। और उसने हृदय से जैन धर्म को स्वीकार करने का निर्णय किया।

गुरुदेव ने उससे कहा- महाराणा की सेना आने ही वाली है। तुम्हारे पास विशाल सैन्य नहीं है। इस बाह्य परिवेश से तो तुम्हारी हार स्पष्ट दिखती है। पर चिंता नहीं करना। जाओ और बाहर बिखरे कुछ कंकर उठा लाओ।

चांदी के एक थाल को कंकरों से भर दिया गया। पूर्णिमा की रात को चंद्रमा की चांदनी में गुरुदेव ने उन कंकरों का अभिमंत्रण करना प्रारंभ किया।

चार घंटे चली साधना के परिणाम स्वरूप वे कंकर दिव्य ऊर्जा और शक्ति से परिपूर्ण हो गये। सामंत को बुला कर वह थाल उसे देते हुए कहा- जब सेना आ जावे। तब सेना के समक्ष इन कंकरों को नवकार महामंत्र गिनते हुए उछाल देना। फिर तुम इन कंकरों का चमत्कार देखना।

भीमसिंह ने उत्कंठा से कहा- भगवन्! क्या इन कंकरों से शत्रु सेना खत्म हो जायेगी!

गुरुदेव ने कहा- मैं जैन साधु हूँ। मेरा धर्म अहिंसा है। अहिंसा ही मेरे प्राण है। हिंसा की बात मेरे द्वारा कैसे हो सकती है!

सामंत ने कहा- हाँ भगवन्! आपकी सानिध्यता ने मुझे यह बोध तो दिया ही है।

गुरुदेव ने कहा- इन कंकरों के प्रभाव से सेना के सारे शस्त्र अस्त्र कुंठित हो जायेंगे। तलवार की धार चली जायेगी। तोपों के गोले नदारद हो जायेंगे। भालों की तीक्ष्णता पुष्पों की कोमलता में बदल जायेगी।

सामंत भीमसिंह चमत्कृत हो उठा। उसे रत्ती भर भी आशंका न थी। गुरुदेव पर अपार श्रद्धा का उद्भव हुआ था। उनकी निःस्पृहता और त्याग देख कर वह परम भक्त हो चुका था।

दूसरे ही दिन सेना गाँव के किनारे आ गयी। सेनापति ने हमले का आदेश दिया। सेना अपने शस्त्रों का प्रयोग करे, उससे पूर्व ही नवकार महामंत्र गिनकर भीमसिंह ने धडकते हृदय से कंकरों की बरसात सेना पर कर दी।

सेना के सारे शस्त्र अस्त्र बेकार हो गये। यह देख कर सेना घबरा उठी। सेनापति दौडता हुआ महाराणा के पास पहुँचा और सारी हकीकत बताई।

महाराणा ने यह चमत्कार सुना तो उसने समझौता करने में ही भलाई समझी। उसने तुरंत संदेश भेजा कि आप सहर्ष दरबार में पधारे। आपका सम्मान किया जायेगा। सामंत भीमसिंह दरबार में पहुँचा और महाराणा की ओर से सम्मान प्राप्त कर प्रसन्न हो उठा। चित्तौड से वापस आकर अपने गाँव में बिराजमान आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि के चरणों में पहुँचा और निवेदन किया- मेरा संस्कार करें। मुझे जैन धर्म की शिक्षा और दीक्षा दें।

चूंकि कांकरावत नामक गांव में यह घटना घटी थी और कंकरों से विजय प्राप्त हुई थी। इस कारण गुरुदेव ने 'कांकरिया' गोत्र की स्थापना करते हुए उसके सिर पर वासक्षेप डाला। इस प्रकार कांकरिया गोत्र की स्थापना हुई। कांकरिया गोत्रीय परिवार पूरे भारत में फैले हुए हैं। इस गोत्र में कई आचार्य, साधु भगवंत हुए हैं। वर्तमान में मुनि मेहुलप्रभ आदि मुनि कांकरिया गोत्रीय है।

भोपालगढ जिसका पुराना नाम बडलू था, जहाँ चौथे दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि महाराज की दीक्षा हुई थी, वहाँ कांकरिया गोत्रीय घर बडी संख्या में है। भोपालगढ के ही मूल निवासी सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व श्री डी. आर. मेहता इसी गोत्र के हैं। भोपालगढ के कांकरिया गोत्रीय परिवार महाराष्ट्र प्रान्त में बडी संख्या में निवास करता है। इन परिवारों की यह विशेषता है कि समय के बदलाव के साथ वे भले अन्य किसी भी पंथ या संप्रदाय के अनुयायी हो गये हों, परन्तु उनके घरों में कुल देवता के रूप में दादा गुरुदेव के चरण पूजे जाते हैं।

गोत्र का निर्माण करने वाले गुरुदेव और उनकी परम्परा के प्रति उन परिवारों के पूर्वजों के कृतज्ञता भावों का यह प्रत्यक्ष उदाहरण है। कांकरिया गोत्र के प्राचीनतम शिलालेख वि. सं. 1492 के प्राप्त होते हैं। इन शिलालेखों में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनभद्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठा कराये जाने का उल्लेख है।

हमारे मुनि मेहुलप्रभ कांकरिया गोत्रीय है। इस गोत्र में और कितने ही साधुओं व साध्वियों ने संयम स्वीकार करके अपनी आत्मा का कल्याण किया है।

श्री व्यापारीलालजी

गोदावरीदेवी

अंजुदेवी-रतनलाल,
कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार,
मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)

प्रतिष्ठान

रतनलाल गौतमकुमार
बोहरा ब्रदर्स

403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

पंचांग

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

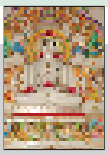

JUN 2015

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1 ज्येष्ठ सुदि 14	2 ज्येष्ठ सुदि 15	3 प्र. आषाढ़ वदि 1	4 प्र. आषाढ़ वदि 2	5 प्र. आषाढ़ वदि 3	6 प्र. आषाढ़ वदि 4
7 प्र. आषाढ़ वदि 5	8 प्र. आषाढ़ वदि 6	9 प्र. आषाढ़ वदि 7	10 प्र. आषाढ़ वदि 8	11 प्र. आषाढ़ वदि 9/10	12 प्र. आषाढ़ वदि 11	13 प्र. आषाढ़ वदि 12
14 प्र. आषाढ़ वदि 13	15 प्र. आषाढ़ वदि 14	16 प्र. आषाढ़ वदि 30	17 प्र. आषाढ़ सुदि 1	18 प्र. आषाढ़ सुदि 2	19 प्र. आषाढ़ सुदि 3	20 प्र. आषाढ़ सुदि 4
21 प्र. आषाढ़ सुदि 5	22 प्र. आषाढ़ सुदि 6	23 प्र. आषाढ़ सुदि 7	24 प्र. आषाढ़ सुदि 8	25 प्र. आषाढ़ सुदि 9	26 प्र. आषाढ़ सुदि 9	27 प्र. आषाढ़ सुदि 10
28 प्र. आषाढ़ सुदि 11	29 प्र. आषाढ़ सुदि 12	30 प्र. आषाढ़ सुदि 13				

पर्व दिवस

1.6.2015 पाक्षिक प्रतिक्रमण
9.6.2015 पू. गुरुदेव उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म., पू. माताजी म. एवं बहिन म. दीक्षा दिवस
15.6.2015 पाक्षिक प्रतिक्रमण 16.6.2015 रोहिणी आराधना 22.6.2016 शाम 4.43 आम-त्याग

जैन धार्मिक शिक्षण शिविर कवर्धा में 14 मई से

रायपुर। महाकौशल जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ द्वारा आयोजित छात्राओं का 46 वां ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर आगामी 14 मई से कवर्धा में आयोजित है, शिविर में 13 वर्ष से अधिक आयु की छात्राओं को प्रवेश दिया जाएगा, यह शिविर प्रवर्तिनी शासन प्रभाविका साध्वी निपुणाश्रीजी की शिष्या प्रवचन प्रभाविका मंजुलाश्रीजी म. सा. की निश्रा में आयोजित है, जिसका संचालन हुकुमचंद मुणोत करेंगे। इस 11 दिवसीय आवासीय शिविर में डेढ़ सौ छात्राओं को प्रवेश दिया जाएगा, शिविरार्थियों को सुबह 5 बजे से निश्चित दिनचर्या में धार्मिक एवं जीवन निर्माण का प्रशिक्षण मिलेगा, शिविर के प्रवेश पत्र छत्तीसगढ के सभी जैन मंदिरों में उपलब्ध कराए गए हैं, जैन श्रीसंघ कवर्धा के सहयोग से आयोजित इस शिविर में जैन धर्म दर्शन, तत्त्वज्ञान, मुर्ति पूजा का रहस्य, जैन इतिहास आदि विषयों की जानकारी दी जाएगी, शिविर में प्रवेश की अंतिम तिथि 10 मई है, शिविर के अंत में 24 मई को महाकौशल जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ का खुला अधिवेशन होगा।

समाचार दर्शन

चेन्नई में प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव : हुआ इतिहास का निर्माण

चेन्नई में प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव : हुआ इतिहास का निर्माण

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. आदि मुनि मण्डल एवं पू. छत्तीसगढ रत्ना महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म. प्रियमित्राश्रीजी म. मधुस्मिताश्रीजी म. ठाणा 4, पू. प्रवर्तिनी श्री प्रेमश्रीजी म. तेजश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रीतियशाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियमेघांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियविनयांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियकृतांजनाश्रीजी म. ठाणा 8, पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री समत्वबोधिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री सत्वबोधिश्रीजी म. ठाणा 4, पू. महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री रश्मिरेखाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री चारूलताश्रीजी

म. पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री तत्वज्ञलताश्रीजी म. पू. साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म. ठाणा 8, पू. खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 आदि विशाल साधु साध्वी समुदाय की पावन सानिध्यता में चेन्नई महानगर में समदांगी बाजार स्थित श्री धर्मनाथ मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

इतिहास

प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. की प्रेरणा से स्थापित श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल द्वारा निर्मित इस मंदिर की गृह मंदिर के रूप में प्रतिष्ठा 26 वर्ष पूर्व आचार्य पद्मसागरसूरिजी म. की निश्रा में हुई थी। गत वर्ष पदाधिकारियों ने निर्णय किया कि इस मंदिर का शास्त्र शुद्ध शिखरबद्ध मंदिर के रूप में जीर्णोद्धार किया जाये। इस लक्ष्य से ता. 27.1.2014 को भूमिपूजन एवं खात मुहूर्त्त किया गया। शिलान्यास विधान ता. 8.2.2014 को किया गया। निर्णय किया गया कि परमात्मा धर्मनाथ आदि तीनों प्रतिमाओं का उत्थापन नहीं करना है। बिना उत्थापन किये जीर्णोद्धार करना है। इसके लिये सोमपुरा व इंजिनियर की सलाह ली गई।

काम थोडा मुश्किल था। पर संकल्प का तीव्र बल था। बिरामी निवासी जी.जी. सोमपुरा ने पूरी जिम्मेदारी ली। इंजिनियरों से संपर्क किया गया। परिणाम स्वरूप मात्र 8 महिने में शिखरबद्ध तीन मंजिला मंदिर तैयार हो गया। इस मंदिर के निर्माण में उत्तम पाषाण प्रेषित करने वाले मकराणा के गोर मार्बल का भी योगदान रहा। जिन्होंने पाषाण-खण्डों की आपूर्ति तीव्र गति से लगातार

की। प्रथम मंजिल पर परमात्मा धर्मनाथ आदि तीनों प्रतिमाओं का उत्थापन नहीं किया गया। मूल गंभारे का रूप दिया गया। परिकर की नई प्रतिष्ठा की गई।

नीचे भूतल पर नये गर्भगृह का निर्माण किया गया जिसमें धर्मनाथ परमात्मा की सपरिकर नई प्रतिमा एवं गर्भगृह के बाहर कोली मंडप में दो देवकुलिकाओं में गणधर श्री गौतमस्वामी एवं दादा जिनकुशलसूरि की प्रतिमा बिराजमान करने का निर्णय लिया गया।

प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ परिपूर्ण हो, इसके लिये यहाँ चातुर्मासार्थ बिराजमान पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. सा. की निश्रा में उनकी प्रेरणा से दादा गुरुदेव के इकतीसे का एक लाख चौपन हजार अखंड पाठ आयोजित किया गया। उनकी प्रेरणा से अखंड आयंबिल व अखंड अट्ठम तप का आयोजन भी हुआ।

प्रतिष्ठा समारोह

हमारा संघ प्रतिष्ठा की विनंती लेकर पूज्यश्री की सेवा में इचलकरंजी पहुँचा। पूज्यश्री से 26 अप्रेल का मुहूर्त्त प्राप्त कर संघ में खुशियों का वातावरण छा गया। कार्यकर्त्ता तैयारी में जुट गये।

पूज्यश्री इचलकरंजी से विहार कर हुबली में प्रतिष्ठा व दीक्षा, बल्लारी में दीक्षा, ईरोड, तिरूपुर, कोयम्बतूर, कन्याकुमारी आदि प्रतिष्ठाऐं संपन्न करवाकर चेन्नई महानगर पधारे। ता. 11 अप्रेल को वडपलनी में पूज्यश्री का महानगर प्रवेश संपन्न हुआ। जहाँ उनकी निश्रा में मुमुक्षु जया सेठिया एवं संयम सेठिया का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। वर्षीदान का वरघोडा निकाला गया। मुख्य सहयोगी बने संयम सेठिया की मासीजी मासाजी श्री कमलेशकुमारजी सौ. मालाजी शिशोदिया परिवार!

ता. 12 को पूज्यश्री विहार कर दादावाडी पधारे। बीच में पुरूषवाक्कम में श्री पुखराजजी मेघराजजी भंसाली के घर पगले किये। उनकी ओर से सामैया किया गया। संघ के नाश्ते का लाभ लिया गया। दादावाडी में वर्षीतप आराधना निमित्त श्रीमती सुन्दरबाई कन्हैयालालजी रांका परिवार की ओर से स्वामिवात्सल्य के साथ दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। ता. 13 को पूज्यश्री दादावाडी बिराजे। ता. 14 को धोबी पेठ होते हुए ता. 15 अप्रेल को पूज्य गुरुवरों व साध्वी मंडल का प्रतिष्ठा दीक्षा निमित्त प्रवेश संपन्न हुआ। रिमझिम बारिश ने गर्मी की तपन को जैसे शान्त कर दिया। भव्य शोभायात्रा के साथ उत्साह व उल्लास का नजारा अलग ही था। नया मंदिर, गुजराती वाडी होते हुए धर्मनाथ मंदिर पधारे।

सभा में पूज्यश्री, पू. साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म., पू.

साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. ने अपने प्रवचनों के माध्यम से परमात्म-भक्ति एवं गुरु-महिमा का वर्णन किया। पू. साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म. ने मधुर स्वरों में गीतिका के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

श्री मोहन मनोज गुलेच्छा, श्री श्रेणिक नाहर आदि ने भजन प्रस्तुत किये। प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव समिति के संयोजक श्री मुकेशजी गुलेच्छा ने सभा का संचालन किया।

ता. 16 से ता. 20 तक पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. के भक्तिभरे प्रवचनों का अनूठा वातावरण रहा। ';षभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो' विषय पर पांच दिवसीय प्रवचन माला चली। बडी संख्या में लोगों ने प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया। धर्मनाथ मंदिर का भवन ठसाठस भरा रहता था।

ता. 19 अप्रेल से प्रतिष्ठा समारोह का श्रीगणेश किया गया। कुंभस्थापना, दीपस्थापना, जवारारोपण आदि मंगल विधान संपन्न किये गये। विधिकारक के रूप में 20वें वर्षीतप के तपस्वी श्री सुरेन्द्र भाई बैंगलोर से पधारे थे। ता. 20 को नंद्यावर्त पूजन आदि विधान किये गये।

ता. 21 को अक्षय तृतीया के दिन परमात्मा का च्यवन कल्याणक विधान संपन्न हुआ। जिन मंदिर में विधान तथा रत्नपुरी नगरी में कल्याणक महोत्सव मनाया गया। कार्यकर्त्ताओं के प्रयत्नों से एक विशाल भूखण्ड समीप ही प्राप्त हो गया था। वहीं पर रत्नपुरी नगर, जिनदत्तनगर, शालिभद्र नगर की रचना की गई थी। कल्याणक महोत्सव भी वहीं था व भोजनशाला भी वहीं थी। प्रतिदिन 20 हजार से अधिक लोगों की साधर्मिक भक्ति की गई। चेन्नई नगर में एक इतिहास बनने जा रहा था। आज

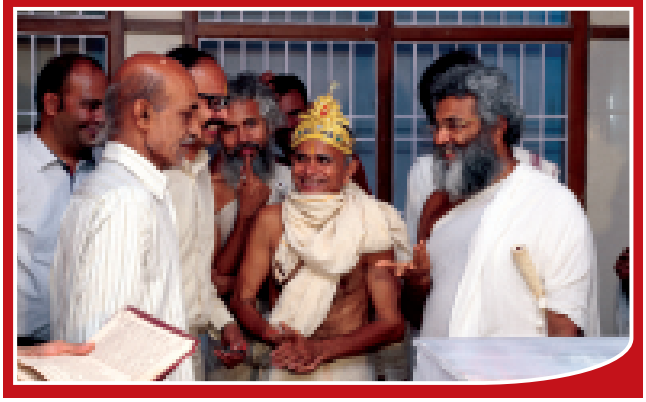

यहाँ बिराजमान तीन साध्वीजी म. का दीक्षा दिवस है। पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म.! उनके संयम की अनुमोदना अभिवंदना की गई। विशेष रूप से पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. की तो यह जन्मभूमि है। अपनी जन्म भूमि में दीक्षा दिवस मनाने का लाभ प्राप्त हो रहा है, इसकी भूरि भूरि अनुमोदना है।

ता. 22 को जन्म कल्याणक विधान व महोत्सव का अपना एक अलग ही नजारा था। परमात्मा के जन्म की बधाई देते हुए लोग भक्ति में झूम रहे थे। संगीतकार नरेन्द्र भाई वाणी गोता का अपना एक अलग अंदाज था।

56 दिक्कुमारिकाओं की तैयारी में पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म.सा. एवं पू. सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा. का पूरा योगदान रहा। कोकिल कंठी साध्वीजी म. के सुमधुर गीतों ने एक भक्ति मय वातावरण का निर्माण किया। उन्होंने इसके लिये बहुत परिश्रम किया।

ता. 23 को जन्म बधाई से समारोह का प्रारंभ हुआ। नामकरण, पाठशाला गमन, विवाह, मामेरा, राज्याभिषेक, नवलोकान्तिक देवों का आगमन व प्रार्थना तक का पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ता. 24 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। बडे बूढे लोगों का कहना रहा- चेन्नई के इतिहास में ऐसी विशाल लम्बी शोभायात्रा पहली बार देखने को मिली है। प्रतिदिन भयंकर ताप बरसाता सूरज भी जैसे आज धीमा हो गया था। बादलों ने गर्मी को एकदम कम कर दिया था। शाम को हुई तेज बारिश ने मौसम को खुशगवार बना दिया था।

ता. 25 को दीक्षा संपन्न हुई। 25 की रात अर्थात् 26 को सुबह ब्रह्म मुहूर्त्त से पूर्व

श्री शांतिन
दादा गुरूदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जि
पू. गणनायक श्री सुख
कर्णाटक प्रान्ते श्री पार्श्वमणि तीर्थ समीपे
वैराग्यनिष्ठा मुमुक्षु सुश्री शिल्पा नाहर
(सुपुत्री श्री महावीरचंदजी-प्रेमलताबाई नाहर)
के संसार निर्गमन संयम यात्रा गमन भागवती दीक्षा प्रसंगे
आत्मीन अनमोल
आमंत्रण
निवेदक
फकीरचंद, महावीरचंद, मोहनलाल, क
सुरेशकुमार, गौतमचंद, कमलेशक
सिन्धनूर मरुधर में क

ाथाय नमः
नकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरूभ्यो नमः
सागरसद्गुरूभ्यो नमः

धान्य नगरी सिंधनुर नगर की धर्म धरा पर

दिव्य आशीर्वाद

पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य भगवंत
श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म.

पावन निश्रा

पूज्य गुरूदेव मरुधर मणि उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पावन सान्ध्यिता

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणरत्ना
श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा.

दीक्षा शुभ मुहूर्त्त - वि. 2072 ज्येष्ठ सुदि 11 शुक्रवार ता. 29 मई 2015

वर्षीदान वरघोडा- वि. 2072 ज्येष्ठ सुदि 10 शनिवार ता. 28 मई 2015

महोत्सव स्थल
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन कल्याण मंडप
हट्टी रोड़, पो. सिन्धनुर
(कर्णाटक)

ुन्दनमल, राजेन्द्रकुमार,
ुमार नाहर परिवार
ुचेरा

अंजनशलाका का महाविधान किया गया। रात 3 बजे यह महाविधान प्रारंभ हुआ था। इसमें 800 से 1000 श्रद्धालु श्रावक श्राविकाओं ने उपस्थित होकर एक कीर्तिमान स्थापित किया था। पूज्यश्री ने अंजनशलाका का गोपनीय विधान करने के पश्चात् तीर्थंकर के प्रतिनिधि के रूप में देशना प्रदान की। 108 अभिषेक के द्वारा निर्वाण कल्याणक मनाया गया।

ता. 26 को शुभ मुहूर्त्त में परमात्मा धर्मनाथ, गणधर गौतमस्वामी, दादा जिनकुशलसूरि, भोमिया बाबा आदि प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। अत्यन्त हर्षोल्लास व भक्ति भरे अनूठे वातावरण में परमात्मा को गादीनशीन किया गया। धर्मनाथ परमात्मा को बिराजमान का लाभ प्राप्त किया श्रीमती छोटाबाई कस्तुरचंदजी जेठमलजी गोपीचंदजी गुलेच्छा फलोदी वालों ने लिया। गणधर गौतमस्वामी को बिराजमान करने का लाभ श्रीमती मानाबाई लालचंदजी गुलेच्छा परिवार ने, दादा जिनकुशलसूरि को बिराजमान का लाभ चेतीदेवी सुगनचंदजी डोसी परिवार ने एवं भोमिया बाबा को बिराजमान का लाभ श्रीमती इचरजबाई चंपालालजी डोसी परिवार ने प्राप्त किया।

अमर ध्वजा व स्वर्ण कलश बिराजमान करने का नया चढावा न बुलवाकर पूर्व में गृहमंदिर की ध्वजा व स्वर्ण कलश के लाभार्थी परिवार क्रमश श्री ताराचंदजी विजयलालजी कोठारी व अभयकरणजी ज्ञानचंदजी कोठारी परिवार को प्रदान किया गया। जिसकी संघ ने भरपूर अनुमोदना की। प्रतिष्ठा के पश्चात् धर्म सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सोमपुरा, संगीतकार आदि का बहुमान किया गया। श्री जिनदत्तसूरि मंडल एवं प्रतिष्ठा महोत्सव समिति की ओर से पूज्य गुरुदेव श्री एवं साध्वीजी महाराज को कामली ओढाई गई। गुरुपूजन किया गया। दोपहर में अष्टोत्तरी शान्ति

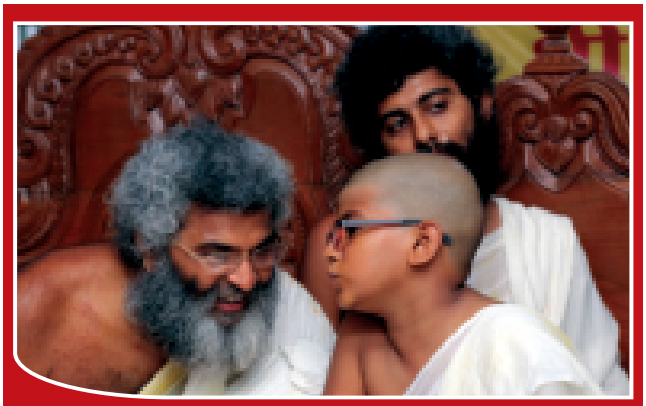

स्नात्र महापूजन पढाया गया। ता. 27 को द्वारोद्घाटन संपन्न हुआ। उसका लाभ तिरूपातूर निवासी श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड तथा उपर के मंदिर के द्वारोद्घाटन का लाभ श्रीमती छोटाबाई कस्तुरचंदजी जेठमलजी गोपीचंदजी गुलेच्छा फलोदी वालों ने लिया।

इस प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव को सफल बनाने में श्री शांतिलालजी गुलेच्छा, श्री मुकेशजी गुलेच्छा, श्री बाबुलालजी गुलेच्छा, श्री रणजीतजी गुलेच्छा, श्री सुरेशजी लूणिया, श्री धर्मचंदजी गुलेच्छा, श्री राजेशजी श्रीश्रीमाल आदि महानुभावों का सक्रिय योगदान रहा।

शासन रत्न अलंकरण प्रदान

धर्मनाथ जिन मंदिर के जीर्णोद्धार नवनिर्माण में पूर्ण रूप से सक्रिय श्री शान्तिलालजी गुलेच्छा को तमिलनाडु खरतरगच्छ संघ की ओर से 'शासन रत्न' अलंकरण अर्पण किया गया। जिसे उपस्थित विशाल जनसमूह ने करतल ध्वनि से बधाया। श्री शांतिलालजी का पूरा जीवन शासन व गच्छ को पूर्ण रूप से समर्पित है। मात्र आठ महिनों के स्वल्प काल में तीन मंजिले मंदिर का निर्माण करना, अपने आप में अद्भुत व अचरज भरी घटना है। जिसे पूर्ण रूप से श्री शान्तिलालजी ने साकार किया है।

पद प्रदान करने के साथ रजत-मय स्मृति चिन्ह अर्पण किया गया। साथ ही संपूर्ण भोजनशाला व कोषाध्यक्ष का दायित्व निर्वहन कर रहे श्री बाबुलालजी गुलेच्छा का भी संघ की ओर से बहुमान/अभिनंदन किया गया।

भागवती दीक्षा का कीर्तिमान स्थापित हुआ

मूल नागोर निवासी श्री योगेशकुमारजी सेठिया की धर्मपत्नी श्रीमती जयादेवी सेठिया एवं उनके सुपुत्र श्री संयमकुमार सेठिया की भागवती दीक्षा ता. 25 अप्रेल 2015 को ऐतिहासिक रूप से संपन्न हुई। ऐसी दीक्षा चेन्नई में पहली बार हुई। दीक्षा समारोह का प्रारंभ प्रात: 9 बजे से हुआ जो मध्याह्न 3.30 बजे तक चला। लगभग 15 से 20 हजार लोगों की विशाल उपस्थिति दीक्षा विधान के अंतिम समय तक बनी रही। यह अपने आप में एक कीर्तिमान था।

ता. 23 अप्रेल को मुमुक्षु संयम व जया देवी का डोराबंधन हुआ। धर्मनाथ मंदिर उपाश्रय पूरा ठसाठस भरा हुआ था। पूरा चेन्नई संघ मुमुक्षु संयम व जयादेवी का अभिनंदन कर रहा था। ता. 23 की रात को विदाई समारोह का संवेदना भरा कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुंबई से पधारे संजय भाउ ने संवेदना से परिपूर्ण सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। ता. 24 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। ऐसी विशाल शोभायात्रा... हजारों लोगों की उपस्थिति... अनुशासित वातावरण... संभवत: चेन्नई नगर में पहली बार देखा गया, ऐसा बडे बूढे लोगों का कहना रहा।

पिछले दिनों से भीषण गर्मी का वातावरण था। लेकिन आज के वरघोडे में मेघराज का आगमन हुआ। और बादलों की छांव ने ठंडक पैदा कर दी। रात्रि को रिमझिम बारिश के खुशनुमा वातावरण में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। जोरदार बारिश हुई थी। सडकों पर पानी बह रहा था। इसके बावजूद पूरा पाण्डाल भर गया था। यह दीक्षा का अभिनंदन था। सभी के हृदय में अनुमोदना का भाव उमड रहा था। मुमुक्षु संयम के भाषण ने सभी की आँखों को अश्रु बहाने के लिये मजबूर कर दिया।

ता. 25 अप्रेल के उस स्वर्णिम प्रभात ने बादलों की ओट से संयम का अभिनंदन किया। रत्नपुरी नगरी का पूरा पाण्डाल 8 बजे से ही

ठसाठस भर गया था। बाहर विशाल मैदान में बडी स्क्रीन वाले टी.वी. लगाये गये थे, जिनमें दीक्षा विधान का सीधा प्रसारण हो रहा था।

परिवार जनों की ओर आज्ञा प्रदान करते ही दीक्षा विधि का प्रारंभ किया गया। रजोहरण प्रदान करने से पूर्व मुमुक्षु जयादेवी का भाषण हुआ। जयादेवी हृदय से बोल रही थी। अपने लाल को जिन शासन को समर्पित कर रही थी... स्वयं भी समर्पित होने जा रही थी। जयादेवी ने बताया- मेरे पुत्र का नाम इसके पापा ने रखा था। उनकी भावना थी कि पुत्र को संयम देना है। मुझे भी संयम लेना है। अपने पुत्र के बारे में जब बोल रही थी, तो मातृत्व छलक पडा। सबकी आंखें भीग गई।

संयम ने कहा- मुझ पर पूजनीया गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. के अनंत उपकार हैं। उन्होंने ही मुझे पढाया और इस योग्य बनाया। मां के उपकारों को मैं कभी भूल नहीं सकता। और जब अपने भाषण के बाद संयम ने अपनी परम उपकारी मां के चरणों का स्पर्श करके अपना सिर मां के पांवों से रगडा और पदधूलि अपने सिर से लगायी तो सारा पाण्डाल भीग उठा। सबकी आंखों से आंसू झरने लगे। माता पुत्र का यह अंतिम मिलन था।

उसके बाद शुभ मुहूर्त्त में जब रजोहरण प्रदान किया गया। तो बडी देर तक जयादेवी एवं संयम नृत्य करते रहे। उसके नृत्य से उसके अन्तर का आनंद अभिव्यक्त हो रहा था।

संयम वेश धारण करने के पश्चात् जब पाण्डाल में पुनः आगमन हुआ तो लोग धन्य हो उठे। और नूतन दीक्षित अमर रहे... के नारों से नभ गुंजाने लगे।

करेमि भंते का प्रत्याख्यान कराने के बाद नाम रखा गया- मुनि मलयप्रभसागर! वे पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के शिष्य बने।

जयादेवी का नाम रखा गया- साध्वी प्रियमुद्रांजनाश्रीजी! वे पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या बनी।

नूतन मुनि के धर्म माता पिता बनने का लाभ लिया- संघवी शा. तेजराजजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर निवासी ने। और नूतन साध्वी के धर्म माता पिता बनने का लाभ लिया- श्री सुपारसचंदजी मदनबाई बैद परिवार ने।

नामकरण का लाभ लिया क्रमशः श्री लक्ष्मीचंदजी बच्छावत- नागोर व श्री वीरेन्द्रमलजी आशिषकुमारजी मेहता परिवार ने!

संघ ने नूतन दीक्षित मुनि व साध्वीजी को वंदना की। उनसे पहला पहला धर्मलाभ श्रवण कर जीवन को धन्य बनाया।

पूज्यश्री ने इस अवसर पर अपने प्रवचन में कहा- इस जगत में ऐसी माताऐं लाखों हैं जो अपने पुत्र के विवाह का सपना देखती है। पर ऐसी माताऐं तो करोडों में एक होती है, जो अपने लाल को परमात्मा महावीर के शासन को समर्पित करती है। जयादेवी की जितनी प्रशंसा और अनुमोदना की

जाय, उतनी कम है। जयादेवी का एक ही सपना था- मेरे पुत्र को अशाश्वत सुख के लिये नहीं, शाश्वत सुख को प्राप्त करने का पुरूषार्थ करना है।

पूज्यश्री ने कहा- आज मेरे लिये अत्यन्त प्रसन्नता का अवसर है कि एक बाल मुमुक्षु संयम ग्रहण कर रहा है। इस समय यदि पू. माताजी म. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी का भी सानिध्य मिल जाता तो खुशियाँ चौगुनी हो जाती। वे इस समय छत्तीसगढ क्षेत्र में विहार कर रहे हैं।

इस अवसर पर उनके आत्म-संदेश को पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने पढकर सुनाया।

पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ने कहा- यह अत्यन्त आनंद का अवसर है कि एक मुनि की वृद्धि हो रही है। उन्होंने पूज्यश्री से आग्रह किया कि वे नूतन मुनि को अच्छी तरह पढा लिखा कर तैयार करे।

आज 25 ता. के सकल श्री संघ के स्वामिवात्सल्य का संपूर्ण लाभ दीक्षार्थी परिवार मुमुक्षु संयम के नानाजी श्री बस्तीचंदजी मामाजी श्री महिपालजी कानूगो परिवार द्वारा लिया गया। उनका भावभीना बहुमान अभिनंदन किया गया।

संकलन प्रस्तुति : कैलाश बी. संकलेचा, चैन्नई

पू. प्रवर्तिनी श्रीविचक्षणश्रीजी म.सा. द्वारा संस्थापित श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल, चेन्नई

अध्यक्ष- रंजीत गुलेच्छा, उपाध्यक्ष- मांगीलाल लोढा, सचिव- धरमचंद गुलेच्छा, सह सचिव- सुरेश लूणिया, कोषाध्यक्ष- बाबुलाल गुलेच्छा, सदस्य- हस्तीमल जैन, शांतिलाल कोठारी, लक्ष्मीराज बच्छावत, श्रीपाल कोठारी, विमलेश डागा, विमल लोढा।

चेन्नई साउकार पेट में संपन्न हुए श्री धर्मनाथ परमात्मा के ऐतिहासिक अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा महोत्सव को सफल बनाने में कार्यकर्त्ताओं का विशेष रूप से योगदान रहा। प्रतिष्ठा को सुचारू रूप से गति प्रदान करने के लिये प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव समिति की रचना की गई।

प्रतिष्ठा महामहोत्सव समिति-

अध्यक्ष- मोहनचंदजी ढड्ढा

स्वागत अध्यक्ष- आसकरणजी गुलेच्छा, राणुलालजी लोढा, सुगनचंदजी बरडिया, वीरेन्द्रमलजी मेहता, सुभाषचंदजी रांका

संयोजक- मुकेशजी गुलेच्छा

सहसंयोजक- महेन्द्र कोठारी, शांतिलाल कोठारी, सुरेश लूणिया, भूपेश रांका, गौतम बच्छावत

इसके अतिरिक्त विभिन्न समितियाँ बनाई गई-

आवास प्रवास समिति-

श्रीपालजी कोठारी संयोजक, मनोजजी झाबक सह संयोजक के अलावा श्री मुकेशजी कोटडिया, संजय कोटडिया, सुरेशजी लूणिया, सुशीलजी कोठारी, नवीनजी बोथरा, संतोषजी लूणिया, दीपकजी झाबक, कमलजी गुलेच्छा, सूरजजी पोकरणा, धीरजजी बोथरा।

मंगल घर समिति-

संयोजक गौतमचंदजी बैद, सह संयोजक निर्मलजी छल्लाणी, निर्मलजी कोठारी, ललितजी, उत्तमचंदजी गुलेच्छा, मंजुबाईसा. गुलेच्छा, रमनलालजी जैन, विचक्षण जैन महिला मंडल।

स्वागत समिति-

संयोजक एम. के. कोठारी, सह संयोजक प्रसन्नचंदजी गुलेच्छा, पीयूषजी कोठारी, कुशलजी रांका, रतनजी लोढा, अशोकजी लोढा, रमेशजी डोशी, प्रदीपजी गुलेच्छा, गौतमजी संखलेचा।

भोजन समिति-

संयोजक भागचंदजी गोलेच्छा, सह संयोजक उत्तमचंदजी रांका, बाबुलालजी गुलेच्छा, प्रकाशजी लूणावत, शिव कुमारजी कोटडिया, महावीरजी बोथरा, विजयलालजी बैद, प्रेमचंदजी डोशी, श्रीपालजी डोशी, हीराचंदजी फोलामुथा, बाबुलालजी जैन, राजेन्द्रजी कानूगा, अशोकजी बैद, विमलजी लोढा, मुकेशजी लोढा, रूपेशजी गुलेच्छा, विजयजी गुलेच्छा, अभिनंदन गुलेच्छा।

मेडिकल समिति

संयोजक प्रेमचंदजी गुलेच्छा, सह संयोजक चंद्रप्रकाशजी खटोड, करमचंदजी गुलेच्छा।

बहुमान समिति–

सुरेशजी लूणिया संयोजक, भूपेशजी रांका सह संयोजक, गौतमजी बच्छावत, राजेशजी गुलेच्छा, विमलेशजी डागा, राजकुमारजी संखलेचा, सुरेशजी झाबक, भरतजी छाजेड, अभयजी लूणिया, निर्मलजी गुलेच्छा, प्रदीपजी गुलेच्छा।

वैयावच्च समिति–

सुरेशजी गुलेच्छा संयोजक, सुरेन्द्रजी कोठारी सह संयोजक, मनोज झाबक, पवन छाजेड, राकेश पारख, दिनेश सेठिया, ललित मेहता, अनिता नागोत्रा, चंद्राबाई, रतन बाई, तारा बाई श्रीश्रीमाल, चंद्राबाई झाबक, प्रकाशजी लोढा, हंसराज लूणिया, विचक्षण जैन महिला मंडल, जिनकुशल युवा परिषद् ।

मंडल व सुरक्षा समिति–

शांतिलालजी कोठारी संयोजक, भरतजी निबजिया सह संयोजक, राजेन्द्रजी सिंघवी, दिनेशजी जैन, हेमंत बच्छावत

वित्त व्यवस्था समिति–

महावीरजी कोठारी संयोजक, मदनचंदजी गुलेच्छा सह संयोजक, बस्तीचंदजी झाबक, करमचंदजी गुलेच्छा, भागचंदजी गुलेच्छा, लक्ष्मीराजजी बच्छावत।

रतनपुरी समिति–

राजेशजी श्रीश्रीमाल संयोजक, संजय कोठारी सह संयोजक, रणजीतजी गुलेच्छा, मुकेशजी गुलेच्छा, गौतमजी बच्छावत, सुरेशजी लूणिया।

तपस्वी वैयावच्च समिति–

श्रीपालजी डोशी संयोजक, चंद्रकांत सह संयोजक, भरतजी, नरेन्द्रजी, दिलीपजी लूणावत।

श्राद्ध मणि का विमोचन

पूजनीया गणरत्ना साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी तपोरत्ना वर्धमान तपाराधिका श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. द्वारा लिखित श्राद्ध मणि पुस्तक का विमोचन संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, संघवी श्री विजयराजजी डोसी, हीरालालजी मुसरफ, कान्तिलालजी मुकीम, सुनीलजी चौरडिया आदि द्वारा किया गया।

इस पुस्तक में श्रावक जीवन के कर्त्तव्यों का विशेष रूप से विवेचन किया गया है। इस पुस्तक पर ओपन बुक एक्झाम का भी आयोजन किया गया है। श्रावक जीवन की मर्यादा समझाने वाला यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है।

वर्षीतप पारणा संपन्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियविनयांजनाश्रीजी म.सा. के लगातार दो वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीया वैशाख सुदि 3 ता. 21 अप्रेल 2015 को अत्यन्त हर्ष व उल्लास के साथ चेन्नई नगर के चूले उपनगर में संपन्न हुआ।

पूजनीया तपस्वी साध्वीजी म. की यह जन्मभूमि है। पारणे का संपूर्ण लाभ उनके सांसारिक परिवार श्री मदनचंदजी बरडिया परिवार द्वारा लिया गया। इस उपलक्ष्य में दो दिवसीय भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। ता. 20 को तप वंदनावली का कार्यक्रम रखा गया, साथ ही भक्तामर महापूजन पढाया गया। ता. 21 को प्रात: चैत्यपरिपाटी का आयोजन किया गया। सभा को संबोधित करते हुए पूज्य उपाध्याय श्री ने कहा- परमात्मा आदिनाथ प्रभु से चली यह परम्परा कर्मक्षय का निमित्त है। एक दिन का उपवास भी मुश्किल से होता है। तो लगातार दो वर्षों तक निरन्तर तप करना, भूरि भूरि अनुमोदना का कारण है। पूज्यश्री ने कहा- पारणा इक्षु रस से इसलिये कराया जाता है, क्योंकि यही एक ऐसा फल है, जो नीचे से उपर तक मीठा है। ऐसा दूसरा कोई फल नहीं है, जिसका पेड मीठा हो।

भजनों की सी. डी. का विमोचन

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा .की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया कोकिल कण्ठी साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा. द्वारा गाये गये विशिष्ट भजनों की सीडी का विमोचन संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा द्वारा किया गया। इस सीडी में 48 भजन गाये गये हैं। जिन्हें श्रवण कर जीवन धन्य होता है।

बिजयनगर पार्श्व भैरव मंदिर चुनाव

श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव मंदिर ट्रस्ट की बैठक ता. 4 मई को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष श्री कैलाशचंदजी संचेती ने की। संस्थान का कार्यकाल पूरा होने से विधान के अनुसार सर्वसम्मति से चुनाव संपन्न कराये गये। जिसमें योगेन्द्रराजजी सिंघवी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। उपाध्यक्ष बने श्री राकेशजी सांखला! मंत्री पवनजी बोरदिया, कोषाध्यक्ष पुखराजजी डांगी, उपमंत्री महावीरजी कोठारी चुने गये।

इस संस्थान के अन्तर्गत पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. डॉ. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव मंदिर का कार्य चल रहा है।

पूज्यश्री का भंसाली जी के घर पगलिये

पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. का सांसारिक परिवार चेन्नई के इसी साहुकार पेठ में रहता है। जिनकी दीक्षा संपन्न हुए 30 वर्ष पूर्ण हुए हैं, दीक्षा के बाद पहली बार अपनी मातृभूमि में पधारे हैं। उनके सांसारिक घर श्री मन्नुभाई भंसाली एवं श्री भूपेशजी भंसाली के घर आंगन चतुर्विध संघ के साथ पूज्यश्री का पदार्पण हुआ।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा- जीवन धर्म के लिये है। धन के आने से सुख मिलेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। परन्तु धर्म के आने से जीवन सुखमय बन ही जायेगा, इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है। अपने जीवन को धर्ममय बनाने का पुरूषार्थ करना चाहिये।

आपका कुल भाग्यशाली है। जिस घर में संयमी आत्मा का जन्म होता है। गौतमस्वामी के रास में विनयप्रभ उपाध्याय फरमाते हैं- धन माता जिणे उयरे धरियो, धन्य पिता जिणे कुल अवतरियो, धन्य सुगुरू जिणे दिक्खियो ए।

आपके घर से एक नहीं, अपितु चार चार संयमी आत्माओं ने जन्म लेकर दीक्षा लेकर अपनी आत्मा का कल्याण किया है व कर रहे हैं।

खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. विशालप्रभाश्रीजी म. उनकी माताजी श्री वीरप्रभाश्रीजी म. एवं विश्वज्योतिश्रीजी म.! इन चार रत्नों को जन्म देने वाला यह भंसाली परिवार निश्चित ही भाग्यशाली है। भंसाली परिवार की ओर से गुरु पूजन किया गया। तत्पश्चात् सकल संघ के नाश्ते का लाभ लिया गया।

भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव सानंद सम्पन्न

बालाघाट। कैवल्यधाम तीर्थ, रायपुर (छतीसगढ़) से विहार कर 29 मार्च को प.पू. बहिन म.सा. प्रखर वक्ता डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. ठाणा 4 का प्रथम बार महाकौशल की धन्य धरा बालाघाट में आगमन हुआ।

पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट एवं सकल जैन श्री संघ की आग्रह भरी विनती को स्वीकार करते हुये भगवान महावीर जन्मकल्याणक तक आपने बालाघाट में ही स्थिरता की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। आप श्री की निश्रा में भगवान महावीर का जन्मकल्याणक बड़े ही आनंद एवं उल्लासमय वातावरण में भक्तिभाव पूर्वक मनाया गया। संत निवास दिगम्बर जैन महावीर भवन में सकल जैन समाज की उपस्थिति में आपने प्रभु महावीर के जीवन-चरित्र को एक अनूठे रूप में प्रस्तुत किया।

आपने अपनी ओजस्वी प्रवचन शैली में कहा कि भगवान महावीर ने प्रतिकूल वातावरण की कोई परवाह न करते हुये साहस के साथ अपने सिद्धान्तों को जनमानस के बीच रखा और हिंसा को नकारते हुये दृढ़तापूर्वक अहिंसा का प्रचार किया। जन्म के बाद मेरु पर्वत पर जन्माभिषेक के समय इन्द्र को हुई शंका के निवारण के लिये बालवय में तीर्थंकर की असीम शक्ति का प्रदर्शन और उन्हीं अनंतबलशाली तीर्थकर प्रभु द्वारा अपनी यौवन अवस्था एवं साधनाकाल में समर्पण, करूणा, दया एवं क्षमा का दिग्दर्शन निश्चित रूप से अलौकिक है। आप श्री ने भगवान महावीर के जीवन-चरित्र का सुन्दर विवेचन अनूठी एवं कल्पनाशील सोच से करते हुये प्रभु के जीवन की विशेष-विशेष घटनाओं को अपनी ओजस्वी वाणी में सकल जैन समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। सकल समाज ने प्रवचन में आपके चिंतन की गुरूता एवं वाणी की विलक्षणता के दर्शन किये।

प्रभु महावीर का माता-पिता के प्रति समर्पण एवं प्रभु आदिनाथ का माता मरूदेवी को छोड़कर संयम अंगीकार करने के निर्णय के तुलनात्मक स्वरूप को उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हुये माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्यों हेतु आज की युवा पीढ़ी को को जागरुक करने का प्रयास किया। प्रभु महावीर के अनेक जीवन-प्रसंगों को प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमुदाय को नया चिंतन दिया।

प्रवचन के पश्चात सकल जैन समाज के तत्वावधान में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। इसमें भी आपने अपनी सान्निध्यता प्रदान कर शोभायात्रा को ऐतिहासिक बना दिया।

वारा सिवनी, कंटगी सिवनी एवं लालबर्रा आदि क्षेत्रो में भी धर्मप्रभावना के लक्ष्य को लेकर आपने वारा सिवनी की ओर विहार करते समय मध्य प्रदेश शासन के कृषि एवं किसान कल्याणमंत्री श्री गौरीशंकर बिसेन एवं जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमति रेखा बिसेन के आग्रह को स्वीकार कर अल्प समय के लिये रूकते हुये एक कथानक के माध्यम से उन्हें जनता की सेवा एवं उनकी समस्याओं के निवारण हेतु सतत प्रयत्नशील रहने का संदेश दिया एवं उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

वारा सिवनी, कंटगी सिवनी एवं लालबर्रा आदि क्षेत्रों में विचरण कर अपूर्व धर्म प्रभावना करते हुये अक्षय तृतीया के अवसर पर पुनः आपका बालाघाट आगमन हुआ। (अजय लूनिया, बालाघाट)

प.पू. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में वर्षीतप आराधकों का अभिनंदन

बालाघाट। बालाघाट श्री संघ के परम सौभाग्य से प्रवर्तिनी प.पू. प्रमोदश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या साध्वीरत्ना प.पू. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. का बालाघाट आगमन हुआ। प.पू. म.सा. की पावन निश्रा में 20 अप्रैल, 2015 को वर्षीतप के तपस्वी श्री अभय सेठिया, सौ मंजु अभय सेठिया, सौ. इंदुदेवी शांतिलाल सिंघी एवं सौ. सरोजदेवी रमेशचंद्र कोचर का अभिनंदन किया गया। पू. म.सा. ने वर्षीतप की महिमा का वर्णन करते हुये कहा कि बिरले ही भाग्यशालियों को इस महान तप से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त होता है। उन्होंने वर्षीतप के सभी तपस्वियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुये उनके मंगलमय जीवन की कामना की।

अभिनंदन कार्यक्रम के पश्चात् प.पू. म.सा. की निश्रा में श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी में श्रीमती कमलादेवी मानकचंद बाफना परिवार द्वारा दादा श्री जिनकुशलसूरिजी को चाँदी की मनमोहक आंगी चढ़ाई गई।

21 अप्रैल को अक्षय तृतीया के मंगल दिवस पर पार्श्वनाथ भवन में विशाल धर्मसभा के संबोधित करते हुये प.पू. म.सा. ने तप का महत्व बताते हुये कहा कि कर्मो की निर्जरा हेतु तप अति आवश्यक है। तप के द्वारा ही भगवान महावीर ने कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त किया। इस अवसर पर रायपुर, दुर्ग लालबर्रा, वारा सिवनी, गोंदिया एवं अन्य अनेक स्थानों से श्री संघों का आगमन हुआ। इसके पूर्व तपस्वियों की भव्य शोभायत्रा भी निकली गई। (अजय लूनिया)

दादावाडी दर्शनम् ग्रन्थ का विमोचन

ता. 25 अप्रेल को भागवती दीक्षा समारोह में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी समुदाय की पावन सानिध्यता में दादावाडी दर्शनम् ग्रन्थ का विमोचन संपन्न हुआ। विमोचन का लाभ श्री समरथमलजी सोनाजी रांका परिवार के भागचंदजी उत्तमचंदजी भूपेश रांका परिवार गोल उम्मेदाबाद वालों ने लिया।

इस ग्रन्थ में तमिलनाडु, कर्णाटक, केरल, आन्ध्र प्रदेश व महाराष्ट्र प्रान्त की समस्त दादावाडियों का पूरा सचित्र इतिहास प्रकाशित किया गया है। यह प्रोजेक्ट श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट जहाज मंदिर द्वारा सन् 2007 में प्रारंभ किया गया था। इस कार्य में श्री कान्तिलालजी रांका, श्री भंवरलालजी संखलेचा का बहुत योगदान रहा। कैलाश बी. संखलेचा ने इस प्रकाशन के लिये पूरी मेहनत की। इस ग्रन्थ का लेखन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. व साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. द्वारा किया गया है। इसकी इतिहास सामग्री एकत्र करने में नवकार प्रिण्टर्स के श्री नीलेशजी जैन, भूपतजी चौपडा पचपदरा वालों ने मेहनत की थी।

महाकौशल में बहिन म.सा. द्वारा धर्म की पावन सलिला प्रवाहित

– भरत प्रजापत

क्षेत्र स्पर्शना करने की भावना से पूज्या गुरूवर्या बहिन म. श्री विद्युत्प्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्री जी, साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्री जी एवं साध्वी श्री विभांजना श्री जी ने महावीर जयंती बालाघाट में संपन्न कर उसी दिन वारासिवनी की ओर विहार किया।

प.पू. साध्वी श्री प्रियंकराश्री जी म.सा. ने स्वागत अभिनंदन करते हुए प्रवचन में कहा- आज अत्यंत आनंद का विषय है। पू. बहिन म.सा. से मिलकर प्रसन्नता हुई। वर्षों पूर्व की स्मृतियाँ ताजी हो गयी हैं। पू. गुरूवर्या महत्तरापद विभूषिता श्री मनोहरश्री जी म. सा. की सान्निध्यता में ही आपसे तीन-चार बार मिलना हुआ, पर उसके बाद तीन दशक के बाद आज पुनः मिले हैं।

पू. बहिन म. ने गुरू परम्परा का विशिष्ट शैली में वर्णन करते हुए कहा- विगत दो-चार वर्ष में लगभग पूरा मनोहर मंडल मिल गया है। मनोहर मण्डल की सरलता देखकर में अभिभूत हूँ।

हमारा जीवन प्रेममय है। बिना प्रेम मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। धरती पर एक दाना बोते हैं, बदले में वह दानों से भरी बालियाँ हमें देती है। संबंधों की धरती परस्पर मिलने से ही उर्वर बनती है।

मुनष्य को मात्र परिवार के छोटे से घेरे में ही नहीं रहना चाहिये। जितना संभव हो, अपना हृदय इतना बड़ा करना चाहिये कि पूरी सृष्टि उसमें आ सके। कई बार हम पशु पक्षी से प्रेम कर लेते हैं, पर अपने निकट के लोगों से दूरी बना लेते हैं। जीवन का आनंद प्राप्त करना हो तो अपने भावों का भरपूर विस्तार करो। संबंधों का यह जगत सरल नहीं है। इस पर वीर पुरूष ही चल सकता है। साध्वीजी श्री प्रियंकरा श्री जी म. से मिलने की उत्सुकता थी। आप सभी से मिलकर खूब आनंद हुआ।

वारासिवनी संघ द्वारा स्वागत करते हुए श्री विनोदजी संचेती ने कहा- हमारे संघ का सौभाग्य है कि आपने इस धरती पर पदार्पण किया। आपका सान्निध्य हमें लम्बा मिलना चाहिये।

वारासिवनी प्रवेश से पूर्व स्थानीय सांसद श्री बोधसिंह भगत ने दर्शन किये।

पूज्यवर्या वहाँ तीन दिन बिराजे। दुर्ग संघ ने बड़ी संख्या में पहुँचकर डॉ. साध्वीजी श्री नीलांजना श्री जी के चातुर्मास हेतू भाव-भरी विनंति की। 15 मई को विहार कर गुरूवर्या श्री वारासिवनी की ही नहीं पूरे क्षेत्र की विशिष्ट गौशाला में पहुँचे।

श्री विनोदजी ने गुरूवर्या श्री को जानकारी देते हुए कहा- प्राणीमित्र श्री कुमारपाल भाई के सान्निध्य ने ही हमें जीवदया के कार्य से जोड़ा। इस गौशाला की व्यवस्था में आज तक करोड़ों रूपये खर्च हुए हैं। क्षेत्र की जनता भरपूर सहयोग करती है। हमें जब भी पता चलता है कि इस क्षेत्र के निकट से कोई गाड़ी गोधन ले जा रही है, हम छापा मारकर उन्हें बचाते हैं और यहाँ ले आते हैं। हमारे इस छापे की कारवाई से क्रोधित होकर एक बार कसाइयों ने हमें धोखे से

जंगल में बुलाया। जब उनके धोखे का पता चला तब अन्य सारे युवक तो इधर-उधर हो गये, पर एक बच्चा उनके हाथ में आ गया। उन्होंने उसकी जो पिटाई की, उससे उसका माथा फट गया। हम उसे नागपुर लेकर गये। दो बार उसके सिर का ऑप्रेशन हुआ। आप यह समझें कि उसे नया जीवन मिला है।

साथ ही उस गौशाला में हजारों कबूतर हैं, सैकड़ो खरगोश हैं। इन सभी के लिये व्यवस्थित साधन बनाये गये हैं। मैंने इस गौशाला का भ्रमण करते हुए देखा कि कितनी स्वच्छता और कितना पवित्र वातावरण है। चारों और शान्त और नैसर्गिक हवा।

वहाँ से गुरूवर्या श्री कटंगी पधारे। चूंकि समय की अल्पता थी, अत: दो ही प्रवचन वहाँ हो पाये। संघ के निवेदन पर भी पूज्या महाराज श्री को सिवानी की ओर प्रयाण करना पड़ा।

सिवनी पूज्या श्री चार दिन बिराजे! चारों दिन प्रवचन सत्संग एवं स्वाध्याय का स्थानीय संघ ने पूरा लाभ लिया। पूज्या श्री का स्वागत करते हुए संघ अध्यक्ष श्री धर्मचंदजी भूरा, संघमंत्री श्री संजय जी मालू ने पूज्या श्री की सरलता एवं विद्वता की व्याख्या करते हुए सिवनी नगर पधारने पर आभार व्यक्त किया। प्रगति महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया! सिवनी संघ की श्रद्धाभक्ति का उल्लेख करते हुए पूज्या श्री ने कहा- स्थानीय संघ ने जिस प्रकार विहार में वैयावच्च की है, वह दुर्लभ है। आज के इस मशीनी युग में लोग पैदल चलना ही भूल गये हैं। ऐसे समय में लगातार हमारे साथ चलकर सिवनी संघ के श्रद्धालु युवकों ने रिकॉर्ड बनाया है।

सिवनी से भावभरी विदायी लेकर गुरूवर्या श्री लालबर्रा पधारे। वहाँ पर आप श्री का दो दिन का प्रवास रहा। संघ के वरिष्ठ श्रावक की विजयजी संचेती ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं सुश्राविका श्रीमति सरलादेवी गुलेच्छा ने गुरू महिमा की गीतिका प्रस्तुत की! लालबर्रा से अक्षय तृतीया के प्रसंग पर गुरूवर्या श्री बालाघाट पधारे।

बालाघाट में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम संपन्न कर पूज्या श्री गोंदिया पधारे। वहाँ बैशाख शुक्ल 6 को दादावाड़ी की ध्वजा कार्यक्रम को अपनी निश्रा प्रदान की। संघ अध्यक्ष श्री पंकज चौपड़ा ने गुरूजनों का स्वागत करते हुए उन्हें अधिक स्थिरता हेतु निवेदन किया, परन्तु सामुदायिक व्यवस्थाओं का जिक्र करते हुए पूज्या श्री ने अपनी असमर्थता प्रकट की।

राजनांदगाँव, दुर्ग होते हुए पूज्यवर्या श्री के 7 मई तक रायपुर पधारने की संभावना है।

वडपलनी में परिकर प्रतिष्ठा संपन्न

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा एवं पू. साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विराग-विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में वडपलनी श्री संभवनाथ मंदिर में ऊपर तल पर शिखर में बने मंदिर में परिकर की प्रतिष्ठा संपन्न हुई

प्रतिष्ठा का लाभ श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टाटिया परिवार तिवरी वालों ने लिया। नौकारसी का लाभ श्री वीरेन्द्रमलजी आशिषकुमारजी कोचर मेहता परिवार जैतारण वालों ने लिया।

प्रतिष्ठा के लिये पूज्यश्री ने चूले से विहार कर दादावाडी होते हुए ता. 4 को प्रात: वडपलनी पधारे। पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् विधि विधान के साथ प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ, नगपुरा में वर्षीतप पारणा महोत्सव

नगपुरा (दुर्ग)। तपोभूमि श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ, नगपुरा, दुर्ग (छ.ग.) में 2 दिवसीय वर्षीतप पारणा महोत्सव भक्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। युवाहृदय सम्राट प.पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासन प्रभाविका पूज्य विदुषी साध्वी श्री विद्युतप्रभाश्री जी म.सा. की सुशिष्या पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्री जी म.सा., पू. सा. दीप्तिप्रज्ञाश्री जी म.सा. 20 अप्रैल की सुबह श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ पधारे। आपश्री के धर्मलाभ संदेश के साथ ही परम्परागत तपस्या अनुमोदना का महोत्सव प्रारंभ हुआ। प्रथम दिवस पूज्य साध्वीजी म.सा. की निश्रा में अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध विधिकारक दिनेश भाई पारेख ने अपनी मण्डली के साथ लाभार्थी परिवार संघवी श्री मनरूपमलजी दुगड़ परिवार साजा, दुर्ग, राजनांदगांव द्वारा आयोजित श्री वीतराग वन्दनार्थ भक्तामर महापूजन पढ़ाया।

प्रथम दिवस भक्ति भावना के पश्चात् मुम्बई (बिजोवा) के सुप्रसिद्ध जैन कवि पत्रकार साहित्यकार एवं रंगकर्मी श्री युगराज जैन निर्देशित आलेखित हृदयस्पर्शी माता-पिता के त्याग पर आधारित बहुप्रशंसित 'माँ' फिल्म का नि:शुल्क प्रदर्शन किया गया। प्रतिष्ठित लेखक समाजसेवी युगराज जैन तपस्वियों के अनुमोदनार्थ तीर्थ आए थे। अपनी परम्परानुरूप अक्षय तृतीया (अक्ती) के अवसर पर 21 अप्रैल को प्रात: तीर्थ पर आकर अंचल के कृषकों ने अपनी फसल की पहली बाली तथा विवाह पूर्व नवदम्पत्तियों ने तीर्थपति श्री पार्श्वनाथ को तेल, हल्दी समर्पित कर अपनी आस्था प्रगट किया।

अक्षय तृतीया के दिन आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए प.पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्री जी म.सा. ने कहा कि- अंतराय कर्म के उदय के परिणाम स्वरूप प्रथम तीर्थकर युगादिदेव श्री ऋषभदेव प्रभु को दीक्षा दिवस से लेकर अक्षय तृतीया तक प्रासुक आहार नहीं मिलने के कारण उपवास लेना पड़ा। अक्षय तृतीया के दिवस परमात्मा को उनके प्रपौत्र श्रेयांसकुमार ने इक्षुरस से पारणा कराया। पूज्य साध्वीजी म.सा. ने जैन धर्म के साथ अन्य धर्म में अक्षय तृतीया की महत्ता को प्रतिपादित किया। तीर्थ के प्रमुख प्रवर श्री रावलमल जैन 'मणि' ने उपस्थित सभी तपस्वियों एवं तीर्थभक्तों का अभिनंदन किया।

अक्षय तृतीया के अवसर पर प्रथम तीर्थपति श्री ऋषभदेव प्रभु के वर्षीतप तपस्या के पारणा की परम्परा में वर्षीतप तपस्वी संघवी श्री मांगीलालजी दुगड़ की पौत्रवधू तथा तीर्थ के संस्थापक प्रमुख प्रवर श्री रावलमल जैन 'मणि' की पुत्रवधू श्रीमति संतोष संदीप दुगड़, दुर्ग, श्राविका विमलाबाई आबड़, मद्रास सहित अन्य तपस्वियों ने तीर्थपति श्री की भक्ति करते हुए पारणा किया।

तीर्थभक्त श्री विमलचंद मुथा, कराड़, श्री सुखराज मेहता, मुम्बई ने तपस्वियों का अभिनंदन किया। तीर्थ के संरक्षक संस्थापक श्री तिलोकचंद गोलछा, भीखमचंद कोठारी, ट्रस्टी पन्नालाल गोलछा, ज्ञानचंद कोठारी, सोनराज गोलछा, ज्ञानचंद बैद, कांतिलाल बुरड़, अमृत लोढ़ा, महावीर कोठारी, संदीप निमाणी, नवीन जैन, राजेन्द्र गोलछा ने पूज्या श्री को कांबली वोहराकर गुरूपूजन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री संदीप जैन 'मित्र' ने किया।

अक्षय तृतीया महोत्सव के अवसर पर मुम्बई, मद्रास, अहमदाबाद सहित छ.ग. अंचल के हजारों तीर्थभक्त उपस्थित थे।

चातुर्मास निर्णय

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. ठाणा 6	रायपुर
पू. मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. ठाणा 2	बीकानेर
पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. 2	फलोदी
पू. प्रवर्तिनी श्री कीर्त्तिप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4	बडौदा
पू. साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4	पालीताना
पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4	तिरूच्चिरापल्ली
पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. शुभंकराश्रीजी म. 8	शिवपुरी
पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि	हॉस्पेट
पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि	रतलाम
पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि	गढसिवाना
पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ठाणा 11	सोलापुर
पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. ठाणा 4	बाडमेर
पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.	
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि	रायपुर
पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि	बैंगलोर
पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि	कटंगी
पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि	चेन्नई धर्मनाथ मंदिर
पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि	गांधीधाम
पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म. आदि	सांचोर
पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि	नागोर
पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि	उदयपुर सूरजपोल दादावाडी
पू. साध्वी श्री विराग-विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि	चेन्नई धोबीपेठ
पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. ठाणा 7	जालना
पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 3	तिरूपातूर
पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. आदि	जोधपुर
पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि	मुंबई विल्सन स्ट्रीट
पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ठाणा	चौहटन
पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. ठाणा	भुज
पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. ठाणा 4	अंजार कच्छ
पू. साध्वी श्री सुरेखाश्रीजी म. आदि	इन्दौर
पू. साध्वी श्री मृगावतीश्रीजी म. ठाणा 3	मालेगांव
पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. ठाणा 3	शाजापुर
पू. साध्वी श्री प्रियंकराश्रीजी म. ठाणा 4	बडी सिवनी

हुबली दादावाडी में वर्षीतप पारणा

श्री आदिनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी हुबली के तत्वावधान में वर्षीतप पारणा के उपलक्ष में रत्नत्रयी महोत्सव का आयोजन किया गया। दादावाडी प्रेरिका मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा. एवं स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में शिष्या साध्वी श्री मनोरमा श्रीजी एवं श्रेयनंदिता श्री के लगातार दूसरे वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष में दि 19.4.15 से 21.4.15 तीन दिवस का महोत्सव आयोजित किया गया। तपस्वी साध्वी के साथ साथ अन्य 13 तपस्वीयो का भी पारणा दादावाडी में हुआ।

अक्षय तृतीया दिनाक 21.4.15 को वर्षीतप आराधक साध्वीजी के साथ साथ अन्य आराधको संग वरघोडा का आयोजन किया गया। श्री शांतीनाथ मंदिर कंचगार गली से दादावाडी तक का वरघोडा निकाला गया। दादावाडी पहुँचने पर प्रवचन हॉल में धर्मसभा का आयोजन हुआ। श्री जिनकुशल महिला मंडल ने स्वागत गीतिका प्रस्तुत की तथा श्री जिनकुशल युवा मंच ने नाटय मंचन द्वारा वर्षीतप पारणा का महत्व समझाया।

इस अवसर पर हॉस्पेट-हुवीनहडगली- शिमोगा संघों की विनती को स्वीकार कर आगामी चातुर्मास की घोषणा की गई।

हुवीनहडगली से पधारे वर्षीतप स्वामीवात्सल्य के लाभार्थी एवं आगामी चातुर्मास के सम्पूर्ण लाभार्थी श्री ललीतजी छाजेड ने अपने संबोधन में कहा कि आज चातुर्मास की घोषणा से हमारे हृदय मे धर्म की धारा बहने लगी है और हम विश्वास दिलाते हैं कि चातुर्मास अत्यंत एवं पूर्ण सफलता तक पहुँचायेंगे।

शिमोगा संघ के अग्रणी श्री सुमेरमलजी छाजेड ने कहॉ कि अत्यंत गहन प्रयत्न के बाद चातुर्मास कराने का हमारा सपना साकार हुआ है अत: हम इस चातुर्मास को उतनी गहराई से लेते हुये अपने जीवन मे बदलाव लाने की कोशिश करेगे।

होसपेट संघ के अग्रणी ने संबोधन मे कहॉ कि मधुरभाषी ऐसी साध्वीयो का चातुर्मास प्राप्त होना होसपेट संघ के लिये अत्यंत सौभाग्य की बात है।

सागर संघ ने प्रतिष्ठा पर पधारने हेतु साध्वीजी से विनती की। इस अवसर पर मुंबई, चैन्नई, इचलकरणजी, हैदराबाद, कोट्टुर, मुंडरगी, सांचोर, सोलापुर, वाणी, मेडिया, सूरत, बल्लारी, गंगाबती, गदग, बारडोली, बिजापुर, आदि विभिन्न संघों से बडी संख्या में भक्तगण पधारे थे।

कार्यक्रम का सुन्दर संचालन श्री जैन मरुधर संघ के सहकार्यदर्शा श्री दिनेशजी संघवी ने किया एवं कान्तिचंद टिमरेसा एवं प्रकाश छाजेड ने उसमे सहयोग किया। आभार अशोक छाजेड ने व्यक्त किया।

श्री सीमंधरस्वामी जिनालय एवं जिनकुशलसूरी दादावाडी ध्वजा महोत्सव

गांधीधाम । प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के निश्रावर्ती प.पू. मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. एवं प.पू. मनीषप्रभसागरजी म.सा. तथा पार्श्वमणि तीर्थउद्धारिका प.पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या प.पू. प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री सीमंधरस्वामी जिनालय एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी का 12वां ध्वजा महोत्सव चतुर्विध संघ द्वारा बडे धूमधाम से वैशाख सुद 4 ता. 22.4.2015 को मनाया गया।

वैशाख सुद 5 को दादागुरुदेव का महापूजन बडे हर्षोल्लास से कराया गया। जिस पूजन का करीब 40 जोड़ों ने लाभ लिया। महापूजन का लाभ नाहटा परिवार-गांधीधाम ने लिया।

वैशाख सुद 6 को श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय एवं मुनिसुव्रत जिनालय की ध्वजा में भी पूज्य-साधू-साध्वीजी महाराजश्री ने निश्रा प्रदान की।

- केवलचन्द नाहटा

विमोचन

पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. के शिष्य पूज्य मुनिप्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. द्वारा आलेखित-संकलित-संयोजित **समस्या-समाधान और संतुष्टि** नामक प्रश्नोत्तर महाग्रंथ का विमोचन शंकरलालजी विजयचंदजी मनीषकुमार बैद फलोदी- कोयम्बतूर वालों के द्वारा चूलै-चेन्नई में दीक्षा के अवसर पर 2 मई 2015 को किया गया।

यह ग्रन्थ पूर्व प्रकाशित अत्यन्त लोकप्रिय सर्वजनोपयोगी प्यासा कण्ठ मीठा पानी पुस्तक का द्वितीय खण्ड है। पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ 17000 प्रश्नोत्तर प्रमाण था और उसका दूसरा खण्ड 20000 प्रश्नोत्तर प्रमाण है।

इस ग्रन्थराज में त्रिषष्ठिशलाका पुरूष, खरतरगच्छ, कर्म के साथ-साथ ज्योतिष, विज्ञान, तत्त्व, इतिहास, साधना, व्यवहार, आचार, शास्त्र, आदि सैंकड़ों विषयों पर प्रश्नोत्तर की शैली में ही नहीं, विविध शक्तियों में प्रस्तुत किये गये हैं। प्रस्तुत पुस्तक के संशोधन-सपादन में पू. साध्वी बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. जी की शिष्या विदुषी आर्याश्री नीलांजनाश्रीजी म. सा. के द्वारा किया गया है। यह पुस्तक घर-घर में सहेजने योग्य है, आँखों में सजाने योग्य और हृदय में उतारने योग्य है। वृहदाकार में 650 पृष्ठ वाली यह दिव्य पुस्तक जहाजमंदिर-माण्डवला में मात्र 200 रूपये में उपलब्ध है।

मुनिश्री द्वारा आलेखित सुन्दर पुस्तक खरतरगच्छ गौरव गाथा के पंचम संस्करण का विमोचन मेघराजजी बच्छावत परिवार द्वारा किया गया। इस पुस्तक में खरतरगच्छ के 30 प्रभावशाली, विद्वान साहित्यकार, साधक आचार्यों का सचित्र विवेचन है। गोत्र, विशेषण, प्रतिबोध, विशिष्ट कार्य आदि को समेटे हुए यह ग्रंथ 20 रूपये में जहाज मंदिर माण्डवला में उपलब्ध है।

संपर्क सूत्र- 09649640451

साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. पूज्य नयज्ञसागरजी म. आगोलाई में प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ पर आयोजित त्रिदिवसीय भक्ति समारोह में अपनी निश्रा प्रदान कर जोधपुर पधारे। कुछ दिन वहाँ बिराजकर विहार कर वैशाख सुदि 15 सोमवार को ब्रह्मसर पधार गये हैं। वे कुछ दिन यहाँ बिराजेंगे।

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. गांधीधाम से विहार कर ता. 4 मई को शंखेश्वर पधार गये हैं। जहाँ उनकी निश्रा में तीन दीक्षाऐं संपन्न होगी। बाडमेर निवासी मुमुक्षु सुश्री मीना छाजेड एवं मुमुक्षु श्रीमती गीता बोथरा की भागवती दीक्षा 28 मई 2015 को तथा पाली निवासी मुमुक्षु भाविका लोढा की 7 जून 2015 को होगी।

पू. प्रवर्तिनी श्री कीर्त्तिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 सूरत बिराज रहे हैं।

पूज्य पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 10 ने चेन्नई से सिंधनूर की ओर विहार किया है। वे रेनीगुंटा, कडप्पा, गूती होते हुए सिंधनूर पधारेंगे। जहाँ उनकी सानिध्यता में कुमारी शिल्पा नाहर की ता. 29 मई को भागवती दीक्षा संपन्न होगी।

पू. महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 4 चेन्नई बिराज रहे हैं। मई के पश्चात् वे तिरूच्चिरापल्ली की ओर विहार करेंगे।

पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। लगभग मई के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

पू. महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 15 ने हुबली से ता. 6 मई को कोट्टूर की ओर विहार किया है। जहाँ उनकी निश्रा में दादावाडी की वर्षगांठ ज्येष्ठ सुदि 5 को दादा गुरुदेव भक्ति महोत्सव के साथ मनाई जायेगी।

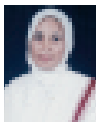

पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 ने हुबली से सागर की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य वर्धमान तपाराधिका साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 फलोदी पधार गये हैं। वे लगभग एक महिना वहाँ पर बिराजेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं। बहिन म. ता. 5 को कैवल्यधाम पधारे हैं।

पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. ठाणा 4 ने चेन्नई से ता. 6 मई 2015 को बैंगलोर की ओर विहार किया है।

पू. महत्तरा श्री चंपा जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा चेन्नई में बिराज रहे हैं। अध्ययन आदि के लक्ष्य से वे चेन्नई के उपनगरों में विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा शंखेश्वर बिराज रहे हैं, जहाँ दीक्षा समारोह का आयोजन मई व जून में होगा।

पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्य साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 नारायणपुर बिराज रहे हैं।

पू. खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभा श्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 चेन्नई बिराज रहे हैं। वे आगामी दो महिनों में चेन्नई के उपनगरों में विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म.सा. (माताजी) बाडमेर के आसपास क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं।

पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 ने आऊ प्रतिष्ठा के पश्चात् फलोदी होते हुए जैसलमेर की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 कोल्हापुर से पूना की ओर विहार कर रहे हैं। उनका चातुर्मास मुंबई में होगा।

पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 7 पार्श्वमणि तीर्थ पधार गये हैं। वे चार पांच दिनों की स्थिरता के पश्चात् सिंधनूर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 अहमदाबाद दादा साहेब नां पगला नवरंगपुरा बिराज रहे हैं। उनकी निश्रा में शिविर का आयोजन किया गया है।

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में पार्श्वमणि तीर्थ पर बच्चों के संस्कार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 250 से अधिक बालक बालिकाओं ने भाग लिया। इस शिविर का आयोजन उनकी प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति द्वारा किया गया।

पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 पालीताना श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में बिराज रहे हैं। वे 10 मई को कच्छ की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 कच्छ में विहार कर रहे हैं।

बडी दीक्षा सम्पन्न

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर के तत्वावधान में मालपुरा दादावाडी के भव्य प्रांगण में गणिवर्य श्री प.पू. पूर्णानन्दसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में एवं प.पू. चन्द्रकलाश्रीजी म.सा., प.पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा., प.पू. शुभदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन सानिध्यता में 25 अप्रेल 2015 को प.पू. सज्जनमणि शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या नूतन दीक्षित साध्वी श्री स्वस्तिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. की बडी दीक्षा मालपुरा दादावाडी की पावन धरा पर धूम-धाम से आनन्द पूर्वक सम्पन्न हुई। इसके साथ ही वहां विराजित प.पू. प्रवर्तिनी विचक्षणश्रीजी म.सा. की सुशिष्या प.पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा. की 62वीं दीक्षा दिवस की भी अनुमोदना की गयी। इस कार्यक्रम में विभिन्न स्थानों से भक्तजन पधारे।

– अनूप कुमार पारख

शूले चेन्नई में भागवती दीक्षा संपन्न

चेन्नई महानगर के शूले उपनगर में कुमारी ममता बरडिया की भागवती दीक्षा ता. 2 मई 2015 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में अत्यन्त उत्साह व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस दीक्षा महोत्सव निमित्त ता. 28 अप्रेल 2015 को पूज्य गुरु भगवंतों का नगर प्रवेश कराया गया। ता. 30 अप्रेल को मुमुक्षु का डोरा बंधन हुआ। तथा संयम उपकरण वंदनावली का आयोजन किया गया। वंदनावली कार्यक्रम का संचालन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी महाराज ने किया। संयम के उपकरणों की विवेचना स्व रचित पद्यों के साथ की। साढे नौ बजे प्रारंभ यह समारोह बारह बजे तक चला। मालू भवन का विशाल हॉल ठसाठस भरा था। कार्यक्रम इतना वैराग्य रस परिपूर्ण था कि एक भी व्यक्ति उठा तक नहीं।

ता. 1 मई को वर्षीदान का वरघोडा निकाला गया। वरघोडे के बाद अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें सभी साधु साध्वीजी महाराज के प्रवचन हुए। पू. साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विराग-विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ने अपने भाव व्यक्त करते हुए मुमुक्षु ममता को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

इस अवसर पर नूतन दीक्षित बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने प्रवचन देकर सबको चकित कर दिया। पूरा हॉल अनुमोदना के भावों से गूंजने लगा।

ता. 2 मई को दीक्षा समारोह में अपार भीड थी। तीन चार अन्य स्थानों पर बडी स्क्रीन लगा कर सीधा प्रसारण करवाया गया। नूतन साध्वीजी म. का नाम साध्वी श्री प्रियमंत्रांजनाश्रीजी म. रखा गया। वे पूज्य गणरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या बनी। इस अवसर पर शाजापुर से डॉ. सागरमलजी जैन, मुंबई से श्री हरखचंदजी गडा आदि विशिष्ट महानुभाव पधारे।

भीलवाडा में दादा मेला का आयोजन

पूजनीया साध्वी श्री राजेन्द्रश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विजयेन्द्रश्रीजी म. की कृपापात्र पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से उनकी निश्रा में भीलवाडा में ता. 17 व 18 मई को दो दिवसीय दादा गुरुदेव जिनकुशलसूरि दादा मेले का आयोजन होने जा रहा है। मेले का आयोजन श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री दादा गुरुदेव मित्र मंडल भीलवाडा द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

इस मेले में राजस्थान के गृह मंत्री श्री गुलाबचंदजी कटारिया, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सचिन पायलट आदि विशिष्ट व्यक्तित्व उपस्थित होंगे। मेले के अन्तर्गत विशाल प्रवचन सभा का आयोजन होगा। दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी। अठारह अभिषेक का भी आयोजन होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित -
राहुल ए. संघवी - 9408395557, 8735039456
• तमन्ना प्रेजेन्ट्स
• राहुल इवेण्ट
अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी
106, साईं कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 109

प्रस्तुत पहेली में एक वृत्ताकार बॉक्स दिया गया है जिसमें मरातपस्वी तीर्थंकर परमात्मा, आचार्य, साधु, साध्वी, आदि के नाम छिपे हुए हैं। उनमें से 15 प्रकट करके अंकित कीजिये।

छ	ज		ग	च्चं	द्र	सू	रि	ज	कु	स
ध	भ		ना	य	सुं	द	री	या	ना	न
ब	बा	ल	ध	पा	बा	ज	क	द	ज	त्कु
ल		भ	य	ह	र	हु	व	ल	मे	मा
भ	म	मी	वि	ख	भू	ति	ब	ली	ता	र
द्र	हा	स्वा	व	ढं	ह	ध	मा	ली	र	
मु	वी	म	क	ढ	दा	न	न	य	ज	
नि	र	त	ला	ण	र्जु	च	द	न	द	पां
ला		गौ		अ	ध	न्ना	नं	भा	नु	च
का	भ		छ	ग	न	सा	ग	र		पा
ली	कु	छु		आ	दि	ना	थ			ण्ड
व	ज्र	स्वा	मी					या		व
च	ल	अ	भ	य	दे	व	सू	रि	या	द	मु

1. ..... 2. .....

3. ..... 4. .....

5. ..... 6. .....

7. ..... 8. .....

9. ..... 10.....

10. ..... 11. .....

12. ..... 12. .....

15. .....

जहाज मन्दिर पहेली
झेरॉक्स करके ही भरें व
इस पत्ते पर भेजे

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा : सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400004 (महा.) मो. : 98693 48764

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 जून तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल जुलाई में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
शा. सुगनचंदजी
राजेशकुमारजी बरडिया
(छबड़ा)
ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | |

जहाज मंदिर पहेली - 107 का सही उत्तर

1. धार तलवार की सोहिली दोहिली चोदमा जिनतणी .....।
2. भक्ति करता छुटे मारा प्राणा प्रभु एव मांगुछु .....।
3. तारे शरणो आत्यो छु स्वीकारी ले, मने लइजा प्रभु .....।
4. कोई कहे लीला अलख अलख तणी लख पूरे मन .....।
5. ऋषभ जिणंदशु प्रीतडी किम कीजे हो कहो .....।
6. देवनु विमान जाणे उतर्यु एवु मंदिर आपनु .....।
7. प्रभु तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाये .....।
8. दु:ख दोहग दूरे टल्यारे सुख-सपंद सु भेंट .....।
9. धन धन क्षेत्र महाविदहेजी धन्य पुण्डरीक .....।
10. पावन बन जाते हम तेरा दर्शन करने से .....।
11. कर लो कर लो रे थे अविजन प्राणी शिवसुख .....।
12. फूलडा ना बाग ना खिले घणा फूलो .....।
13. विमलगिरि, क्यों न भये हम मोर, विमलगिरि .....।
14. शांति जिनेश्वर साचो रे साहिब शांति करणइण कलि।
15. सेवक ने वलवलतो देखी मन मा मेहरन धरशोरे .....।
16. शरणो राखो कृपा करी साहिब ज्यों पारेवो .....।
17 नाम है तेरा तारणहरा कब तेरा दर्शन् .....।
18. आणी मन सुध आसता देव जुहारू शासता .....।
19. मारी आँखों मा पार्श्वनाथ आजो रे .....।
20 तार हो तार प्रभु मुझ सेवक मणी जगत .....।

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- नमिता जैन- उदयपुर,

छह प्रोत्साहन पुरस्कार- किरण बैदमुथा-रायपुर, फीणी बेन बाफणा- कोटुर, शान्ता वैद- जोधपुर, प्रकाशचन्द बाठियाँ- जयपुर, भूमिका टाटिया- जगदलपुर, अक्षिता राखेचा- त्रिची

इनके उत्तर पत्र सही थे- साध्वी विशालप्रभाश्रीजी- पालीताणा, सुयशाश्रीजी- मालपुरा, साध्वी विभांजनाश्रीजी- रायपुर, साध्वी दिव्यदर्शनाश्रीजी- जयपुर, तत्त्वदर्शनाश्रीजी- पालीताणा।

मनीला पारख- जयपुर, चन्द्रप्रकाश जैन- जयपुर, कमलेश भंडारी- जयपुर, पिस्ता गोलेच्छा- जयपुर, प्रेमदेवी दुगड़- जयपुर, सुनीता जैन- जयपुर, संजय कोठारी- अमलनेर, सीमा भण्डारी- ब्यावर, चित्रा झाबक- बड़ौदा, माही पटवा- जालोर, विनिता पटवा- जालोर, स्नेहलता- जयपुर, स्वरूपचन्द- जयपुर, प्रमिला- जयपुर, पुष्पलता जैन- जयपुर, सीमा जैन- जयपुर, रेणु चौपड़ा- ब्यावर, सुमित्राजैन- नोएडा, सुलोचना जैन- ब्यावर, संगीता बुरड़, निर्मलाजैन- उदयपुर, नीरज जैन- उदयपुर, ईशिका- मालपुरा, नरेशकुमार- मालपुरा, सुनीता डोसी- जोधपुर, मन्जु- सूरत, मधु जैन- ऊटी, बबीता जैन- नंदुरबार, विमला संकलेचा- हैदराबाद, भवरी जैन- ऊटी, जयश्री जैन- ऊटी, प्रणय छाजेड़- बुन्दी, किरण जैन- पालीतणा, सुरेखा धारीवाल- कोटुर, सोनी- कोटुर, पुष्पा जैन- ब्यावर, शोभा जैन- तिरछी, चन्द्रा जैन- भाईन्दर, तारा जैन- भाईन्दर, जयश्री जैन- भाईन्दर, मीना बोथरा- इचलकरंजी, पक्षाल जैन- कोटुर, राजकुमारी जैन- बुंदी, वीणा जैन- जयपुर, सुन्दरी जैन- तिरछी, राशी जैन- धमतरी, कृष्णा जैन- मालपुरा, माला चतुरमुथा- खरीयार रोड, विवेक- जगदलपुर, समर्थ पारख- मुंबई, भारती जैन- जीयाजन, आकांक्षा जैन- मालपुरा, महला जैन- मालपुरा, सविता जैन- मुंबई, ममता- मुंबई, मनोहरी बेन- नंदुरबार, नेहा- नंदुरबार, झलक कोचर- दुर्ग, सरोज गोलेच्छा- राजनांदगाँव, निर्मला बच्छावत- फलोदी, कंवरलाल रांका- ब्यावर, पारसकुमार भण्डारी- कोटा, मनोहरलाल झाबक- कोटा, सुनीता गोलेच्छा- पाली, विमला बाई ललवानी- तिरूपत्तूर, विकास बाठिया- जयपुर, मदनलाल कोचर- अक्कलकुआं, इन्द्रादेवी सकलेचा- हैदराबाद, चन्द्रसिंह जैन- उदयपुर, विनिता बच्छावत- फलोदी, महावीर जैन श्री श्रीमाल- मदुराई।

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जटाशंकर का दोस्त लम्बे समय बाद शहर में आया था। व्यापार आदि के कारण वह लगभग तीन साल तक बाहर रहा था। काम इतना ज्यादा था कि अपने मित्र से दूरसंचार पर वार्तालाप भी नहीं कर पाया था।

उसने जल्दी से आवश्यक कार्य निपटा कर मित्र के घर की ओर मुख किया। मित्र के घर पर पहुँचा तो पाया कि उसका मित्र घर पर नहीं है। उसका छोटा भाई वहीं था।

उसने छोटे भाई ने पूछा- भैया! मेरा दोस्त जटाशंकर दिखाई नहीं दे रहा। कहाँ है?क्या कर रहा है?

छोटे भाई ने जवाब दिया- कुछ दिन पहले दुकान खोली थी।

उसने पूछा- अच्छा किया। व्यापार होगा। दो पैसे की आय होगी तो बुढापे में काम आयेगी। पर वह है कहाँ!

सर! आप पूरी बात तो सुनिये।

उसने कहा- दुकान खोली थी। इस कारण वह जेल चला गया। अभी वहीं है।

- दुकान खोलने से जेल क्यों चला गया!

- अरे भाई! दुकान चाभी से नहीं, हथोडे से खोली थी, इसलिये।

ओह! चोरी की थी। फिर तो जेल जायेगा ही।

गलत काम का परिणाम तो भुगतना ही पडता है। कदाच यहाँ बच जाय पर कर्मराज के आगे कोई नहीं बच सकता। कर्मों का भुगतान तो करना ही होता है।

ब्यावर (राज.) खरतरगच्छ नवयुवक मण्डल के चुनाव सम्पन्न

श्री जैन श्वेताम्बर दादावाडी में खरतरगच्छ नवयुवक मण्डल के द्विवार्षिक चुनाव सौहार्दपूर्ण वातावरण में खरतरगच्छ संघ के वरिष्ठ सदस्यो की उपस्थिति में सम्पन्न हुए इसमें अध्यक्ष पद के लिए निष्ठावान, योग्य, कुशल, गुरूभक्त, संघ के प्रति पूर्ण समर्पित श्री भगवन्त रांका पुत्र. स्व. राम्मूमलजी रांका तथा सचिव पद के लिए युवा, उत्साही, कर्मठ कार्यकर्ता, मिलनसार श्री नरेन्द्र भण्डारी को सर्व सहमति से चुना गया। इन्होंने अपनी कार्यकारिणी में निम्न सदस्यो को सम्मलित किया।

उपाध्यक्ष पद के लिये श्री महेन्द्र छाजेड़, कोषाध्यक्ष आलोक सिंघवी, सहसचिव हमेन्द्र छाजेड़, कार्यकारिणी सदस्य पदम भंसाली, मनीष डोसी, दीपक कांकरिया, विकास खरोड, मोहित बैंगानी। ब्यावर खरतरगच्छ नवयुवक मण्डल का इतिहास बहुत ही गौरवशाली एवं गरिमामय है, लगभग 50 वर्षो से अधिक यह अनवरत् रूप से सामाजिक कार्यो में सलग्न है, कई दीक्षा प्रतिष्ठा महोत्सव जैसे बड़े कार्य सम्पन्न करवाय है। वर्तमान में इसमे करीब 100 सदस्य है। अपने अध्यक्षीय उदबोधन मे भगवन्त रांका ने सभी सदस्यो का हार्दिक अभिनन्दन एवं अन्तर हृदय से आभार व्यक्त किया एवं अपनी जिम्मेदारी को विनम्रता एवं प्रतिबद्धता के साथ स्वीकारा, उन्होंने कहा कि मेरा इस जिम्मेदारी के पीछे एक ही लक्ष्य एवं उद्देश्य है कि हमारा समाज नई बुलन्दियो को प्राप्त करे। हमारे पुर्वजो एवं बुजुर्गो द्वारा इस गौरवमय संघ की मजबुती एवं उन्नति में बहुत बड़ा योगदान व त्याग रहा है। जिसमें विशेषत: हाला संघ एवं मूलतान संघ के पूर्वजो के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

संयोजक : श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी संस्थान शंखेश्वर

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

मूलनायक प्रतिष्ठा
गुलेच्छा परिवार द्वारा

दीक्षा महोत्सव
का अनूठा दृश्य

विशेषांक सहयोगी

श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल, चैन्नई

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, मांडवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649642451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, मांडवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर ऑफसेट प्रेस सोहलाला, सिवाना रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408